नेल्सन मंडेला कौन थे?

पाम पोलाक
और मेग बेल्विसो

चित्र: स्टीफन मार्चेसी

नेल्सन मंडेला कौन थे?

नेल्सन मंडेला कौन थे?

पाम पोलाक और मेग बेल्विसो

चित्र: स्टीफन मार्चेसी

विषयवस्तु

1927 में राजा जोंगिंताबा एक आदिवासी सभा कर रहे थे. वहां इकट्ठे लोगों ने महत्वपूर्ण मामलों के बारे में बातें कीं. उस कमरे में एक छोटा लड़का भी था जो कुछ समय पहले ही महान महल में रहने आया था. वो नौ साल का था. लड़के के पिता की मृत्यु के बाद राजा ने उसे गोद ले लिया था.

लड़के ने उन लोगों की बातें सुनीं और फिर अपने दत्तक पिता को देखा. राजा कुछ भी नहीं बोले. उन्होंने बस लोगों की बातें सुनीं. राजा मानते थे कि उनके राज्य में हरेक आदमी को अपनी आवाज का हक था, चाहे वो कोई भी हो. जब राजा ने सब लोगों की बातें सुन लीं, तो फिर उन्होंने अपनी राय दी. यह तरीका एकदम अलग था. दक्षिण अफ्रीका में बाकी जगह इस तरह का शासन नहीं था.

दक्षिण अफ्रीका, अफ्रीकी महाद्वीप के निचले सिरे पर स्थित एक देश है. उसका आकार टेक्सास से लगभग दोगुना है. कभी दक्षिण अफ्रीका में काले राजाओं का शासन था. फिर यूरोप से गोरे आकर वहां बस गए. उन्होंने खुद के लिए स्थानीय लोगों की जमीन हड़प ली और उस देश पर अधिकार कर लिया.

1800 के अंत तक, काले दक्षिण अफ्रीकियों की, अपनी सरकार में कोई आवाज नहीं थी. जब वो लड़का अपने नए दत्तक पिता के साथ रहने आया, तब तक दक्षिण अफ्रीका में लगभग साठ लाख लोग थे - जिनमें से करीब चालीस लाख काले थे. सही मायनों में काले लोग अपने देश के नागरिक नहीं थे क्योंकि वे मतदान नहीं कर सकते थे. वे केवल वहीं रह सकते थे जहां सरकार ने उन्हें रहने की अनुमति दी थी. यहां तक कि जोंगिंताबा जैसे राजाओं के पास भी कोई वास्तविक सत्ता नहीं थी.

जब उस नौ वर्षीय लड़के ने अपने दत्तक पिता की बैठक को देखा, तभी उसने अपने ज़हन में दक्षिण अफ्रीका का एक अलग सपना सँजोया, जहां सभी रंगों के लोगों की आवाज होगी. जहां सब लोग स्वतंत्र और समान होंगे. बड़े होने पर उसने अपने इस सपने को साकार करने की कोशिश की.

उस लड़के का नाम नेल्सन मंडेला था. एक दिन वो दक्षिण अफ्रीका में क्रन्तिकारी बदल लाएगा. एक दिन वो दुनिया को बदलेगा.
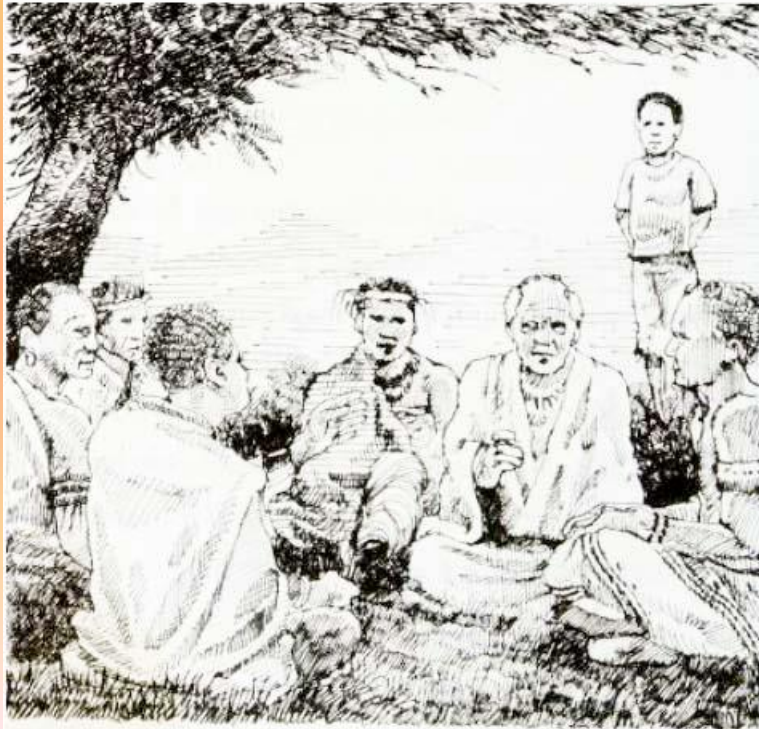
अध्याय 1

उपद्रवी

उस लड़के का नाम रोलीहलाला था. उनकी मूल भाषा में इस शब्द का अर्थ "पेड़ को हिलाने वाला" होता था. लेकिन उसका मतलब संकट खड़ा करने वाला भी था. लड़के के पिता थेम्बू जनजाति के प्रमुख थे.

कई प्रमुखों की तरह, उनकी एक से अधिक पत्नियाँ थीं, और उनके तेरह बच्चे भी थे. लड़के की मां नोसेकेनी फैनी अपने पति की तीसरी पत्नी थी. रोलीहलाला अपनी मां की चार संतानों में से पहला था. उसका जन्म 18 जुलाई 1918 को हुआ था.
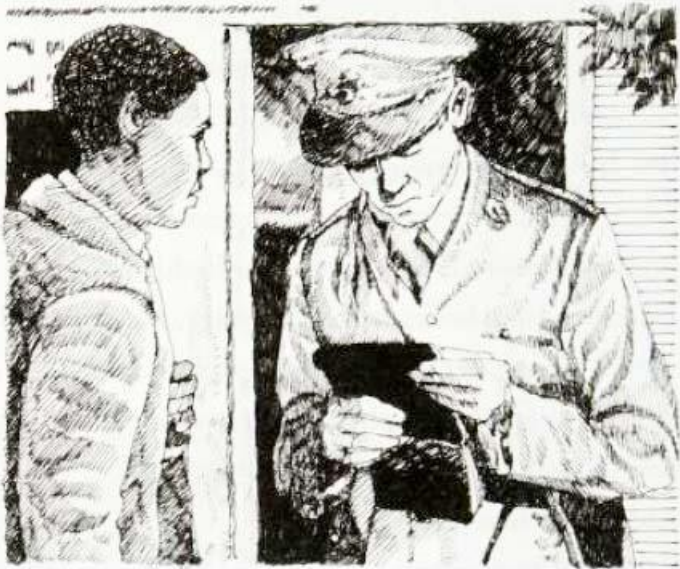
अगर काले व्यक्ति को बिना कारण के किसी गोरे पड़ोस में पाया जाता तो उसे गिरफ्तार कर लिए जाता था. जब रोलीहलाला के दत्तक पिता ने अदालत में पेश होने के लिए ब्रिटिश सरकार के एक सम्मन को नज़रअंदाज़ किया, तो उनसे उनकी उपाधि और उनकी अधिकांश ज़मीन और मवेशी छीन लिए गए. उसके बाद लड़का और उसकी माँ उस गाँव में रहने चले गए जहाँ उसका जन्म हुआ था. लड़का, यूरोप के ईसाई मिशनरियों द्वारा चलाए जा रहे एक स्कूल में पढ़ने गया. स्कूल जाने के लिए पिता ने उसे घुटने पर कटी हुई अपनी पतलून की एक जोड़ी दी. नहीं तो घर पर लड़का लाल मिट्टी के रंग का कंबल ही पहनता था.

उन दिनों दक्षिण अफ्रीका पर अंग्रेजों का शासन था. दक्षिण अफ्रीका के काले लोग क्या करेंगे और कहाँ जायेंगे इसको गोरी सरकार ने सख्ती से नियंत्रित किया था. काले लोगों को अपने-अपने मोहल्लों और गाँवों में ही रहना पड़ता था, जिन्हें वतन (होमलैंड) कहा जाता था. यदि कोई काला व्यक्ति किसी भी कारण से अपने वतन को छोड़कर कहीं और जाना चाहता था, तो उसे एक विशेष "पास" लेना पड़ता है जो उसे उस यात्रा की अनुमति देता था, भले ही वो केवल दिन के काम के लिए नज़दीक के गोरे पड़ोस में क्यों न जा रहा हो.

जब नेल्सन के पिता परिवार से मिलने आते तो वो सबके लिए हमेशा एक खास समय होता था. लेकिन, अपनी एक यात्रा के दौरान, नेल्सन के पिता बीमार पड़ गए और उनकी मृत्यु हो गई. न केवल उसके पिता गुज़र गए थे, बल्कि अब नेल्सन को अपनी बहनों और मां के साथ गांव छोड़ना पड़ा. उसके नए दत्तक पिता थे - जोंगिंताबा.

नेल्सन और माँ, अपना सारा सामान लेकर गाँव से पश्चिम की ओर चल पड़े.
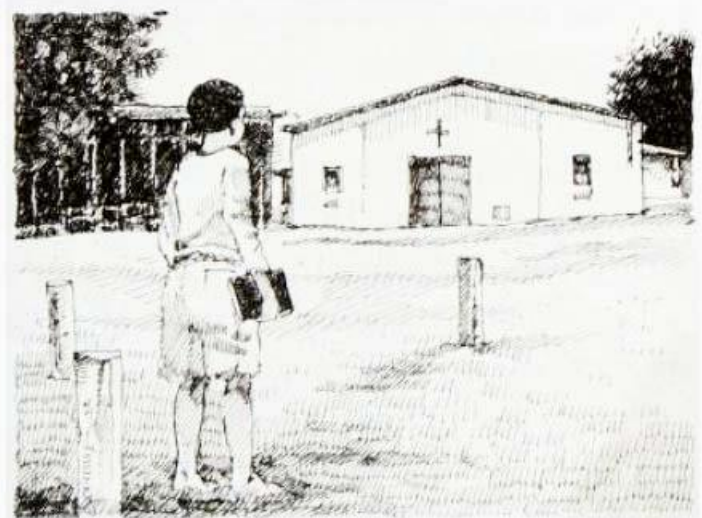
जब लड़का स्कूल गया तो उसके शिक्षक ने उसे एक पश्चिमी नाम दिया. उस दिन से रोलीहलाला को नेल्सन कहा जाने लगा - नेल्सन मंडेला.

नेल्सन अपनी माँ और छोटी बहनों के साथ तीन छोटी झोपड़ियों में रहता था. वो चरागाह में भेड़ और बछड़े चराता था और फिर उन्हें वापस लाता था. उसका पसंदीदा खेल "स्टिक फाइटिंग" था – जो एक पारंपरिक दक्षिण अफ्रीकी खेल था और वो तलवार की लड़ाई जैसा ही था. हर खिलाड़ी के पास दो छड़ियाँ होती थीं, प्रत्येक हाथ में एक. उनसे वो प्रतिद्वंदी को रोकते हुए हमला करने की कोशिश करता था. नेल्सन अपने गांव में इस खेल का चैंपियन था.

वे सारा दिन पथरीली सड़कों पर चलते रहे. जब वे अपने मुकाम पर पहुंचे, तो नेल्सन को अपनी आँखों पर यकीन नहीं हुआ. उसने इतना बड़ा घर पहले कभी नहीं देखा था. उसके खुले गेट से एक फैंसी कार बाहर निकली. बाहर निकलने वाला आदमी छोटा और भारी-भरकम था और उसने यूरोपीय शैली का सूट पहना था. वो जोंगिंताबा थे.

हालांकि नेल्सन अपनी नई दुनिया से बहुत चकित था, लेकिन उसके लिए एक अजीब नई जगह में अकेले रहना कुछ डरावना था.

सौभाग्य से जोंगिंताबा का, जस्टिस नाम का एक बेटा था, जो नेल्सन से चार साल बड़ा था. दोनों लड़के गुलेल से शिकार करते थे, ग्रामीण इलाकों में घूमते थे और घोड़ों पर चढ़कर दौड़ लगाते थे. नेल्सन गाँव के एक अच्छे स्कूल में पढ़ने गए. उन्होंने अंग्रेजी, इतिहास और भूगोल का अध्ययन किया. लेकिन उन्होंने आदिवासी बुज़ुर्गों के साथ, बैठकों में जाकर सबसे ज्यादा सीखा. नेल्सन ने सपना देखा - एक दिन वो अपने दत्तक पिता की तरह ही एक महान नेता बनना चाहते थे.

यूरोपीय आगमन

पंद्रहवीं शताब्दी में, यूरोपीय राष्ट्र पूरी दुनिया में अपने जहाज भेज रहे थे. पूर्व की ओर जाने वाले जहाज जो एशिया की ओर जाते थे, आमतौर पर अफ्रीकी महाद्वीप के निचले सिरे से होकर गुज़रते थे. वे भोजन और पानी की रसद को बहाल करने के लिए दक्षिण अफ्रीका के नाम से जाने वाले क्षेत्र में रुकते थे. 1647 में एक डच जहाज दक्षिण-पश्चिमी तट पर टूट गया. उसके जीवित नाविकों को वो क्षेत्र इतना पसंद आया कि वे वहीं रुक गए और उन्होंने वहां एक किले का निर्माण किया. धीरे-धीरे वहां बहुत सारे डच आए और उन्होंने स्थानीय लोगों को उनकी भूमि से खदेड़ दिया.

उन लोगों ने डच शासन के आधीन, अफ्रीका में अपनी एक डच अपनी कॉलोनी बनाई. बाद में जब यूरोपियों ने दक्षिण अफ्रीका में सोने और हीरे की खोज की तो उससे वहां की ज़मीन और भी मूल्यवान बन गई. अठारहवीं शताब्दी में वहां पर अंग्रेजों ने अधिकार कर लिया. बसने वाले कई डच लोग, अंग्रेजों से दूर होने के लिए अफ्रीका में और अंदर की ओर चले गए. 1902 में, अंग्रेजों और डचों की लड़ाई के बाद, दक्षिण अफ्रीका के उपनिवेश पर अंग्रेजों का राज्य हो गया.

नेल्सन को पुराने अफ्रीकी हीरो और बहादुर लोगों की कहानियां सुनना पसंद थीं, क्योंकि वे स्थानीय लोग, डच और अंग्रेजों के खिलाफ लड़े थे. इन कहानियों में काले दक्षिण अफ़्रीकी लोगों पर, जोंगिंताबा जैसे उनके अपने राजाओं का शासन था. "जब यूरोपीय, अफ्रीका में आए," आदिवासी बुजुर्गों ने कहा, "तब उनके पास बाइबिल थी और हमारे पास सारी जमीन थी. उन्होंने कहा, 'चलो प्रार्थना करते हैं.' हमने अपनी आँखें बंद कर लीं, जब हमनें आँखें खोलीं तो हमारे पास बाइबिल थी और उनके पास हमारी ज़मीन थी."

अध्याय दो

प्रकाश का शहर
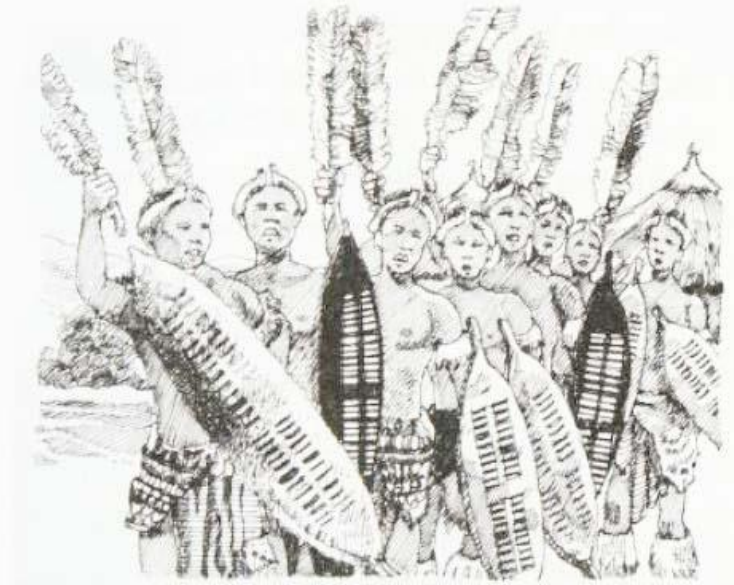
जब नेल्सन सोलह वर्ष के हुए, तब उन्होंने और जस्टिस ने एक महत्वपूर्ण समारोह में भाग लिया, जहाँ वे दोनों गाँववालों की नज़रों में पुरुष बने.

समारोह के बाद एक आदिवासी नेता ने भाषण दिया. "इन नौजवानों में ऐसे प्रमुख हैं जो कभी शासन नहीं करेंगे क्योंकि हमारे पास खुद पर शासन करने की कोई शक्ति नहीं है," उस आदमी ने कहा.

लेकिन नेल्सन बड़े होने पर शासन करना चाहते थे. उन्होंने एंगकोबो में एक बोर्डिंग स्कूल में पढ़ाई की ताकि वे एक दिन जोंगिंताबा जैसे शासकों को सलाह दे सकें. फिर 1937 में उनका चर्च द्वारा संचालित कॉलेज, हेडटाउन में तबादला हो गया. वहां से वे फोर्ट हेयर गए, जो देश में एकमात्र, काले छात्रों का कॉलेज था.

फोर्ट हेयर

नेटिव अफेयर्स विभाग

कई गोरे दक्षिण अफ्रीकी मानते थे कि सभी काले लोगों को बस उतना सीखना चाहिए जिससे वे गोरे लोगों की सेवा कर सकें. गोरे लोगों ने सोचा कि फोर्ट हेयर जैसे स्कूलों ने, काले, दक्षिण अफ़्रीकी लोगों के दिमाग में बुरे विचार भर दिए थे. गोरे लोगों ने काले लोगों को यह सोचने पर मजबूर किया, कि वे भी गोरे लोगों की तरह ही स्मार्ट थे और नौकरियों के लिए उनसे प्रतिस्पर्धा कर सकते थे.

फोर्ट हेयर स्कूल ने नेल्सन को नए विचार दिए. उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के बाहर की दुनिया का अध्ययन करना शुरू किया. नेल्सन ने नेटिव अफेयर्स डिपार्टमेंट में, काम करने की योजना बनाई. वो विभाग "पास" और "परमिट" जैसे कानूनों को लागू करता था. सभी काले दक्षिण अफ्रीकियों को हर समय एक "पासपोर्ट“ रखना पड़ता था. नेल्सन उन कानूनों को बदलना चाहते थे ताकि काले लोगों के साथ बेहतर व्यवहार हो. उन्होंने अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए स्कूल में कड़ी मेहनत की.

लेकिन 1940 में, छात्रावास में खराब स्थितियों के विरोध में, नेल्सन ने छात्र प्रतिनिधि परिषद से इस्तीफा दे दिया. नेल्सन के कॉलेज के दोस्त ओलिवर टैम्बो ने बाद में कहा, "रात का भोजन, रोटी के चार पतले टुकड़े होते थे, जिन्हें पानी मिले दूध के एक छोटे कप के साथ खाना पड़ता था."

स्कूल के अधिकारियों ने कहा कि छात्र सरकार से इस्तीफा देने वाले हर छात्र को, स्कूल से निकाल दिया जाएगा. जब जोंगिंताबा को यह पता चला कि नेल्सन ने स्कूल छोड़ दिया है तो उन्होंने नेल्सन को स्कूल वापस लौटने का आदेश दिया.

जोंगिंताबा ने नेल्सन को, शादी करने का भी आदेश दिया.

जोंगिंताबा ने नेल्सन के लिए एक आदर्श दुल्हन भी खोजी. नेल्सन ने बाद में कहा, वो "मोटी और प्रतिष्ठित" थीं. कुछ लोगों के अनुसार वो जोंगिंताबा के बेटे जस्टिस से प्यार करती थी.

पर तब दोनों में से कोई भी लड़का शादी करना नहीं चाहता था. इसलिए वे दोनों दक्षिण अफ्रीका के सबसे बड़े शहर में भाग गए. नेल्सन मंडेला को, जोहान्सबर्ग प्रकाश के शहर की तरह दिखाई दिया. "बिजली का एक विशाल परिदृश्य," उन्होंने उसे बुलाया.
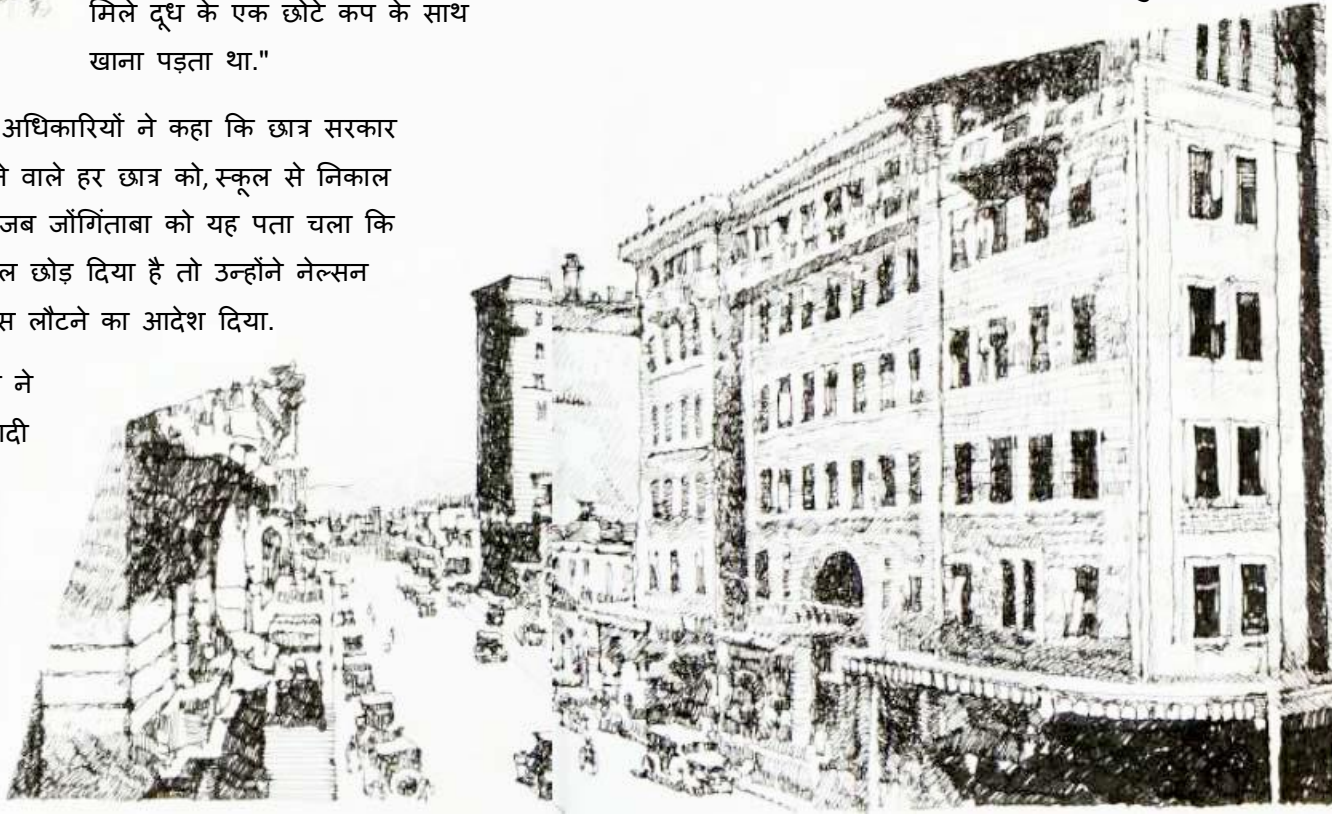
नेल्सन और जस्टिस को वहां नौकरी मिल गई, लेकिन जल्द ही जोंगिंताबा के आदमियों ने उन्हें पकड़ लिया. अपने पिता का स्थान संभालने के लिए जस्टिस को घर लौटना पड़ा. लेकिन नेल्सन ने अपने दत्तक पिता को, शहर में रहने और कानून का अध्ययन करने के लिए मना लिया.

जोहान्सबर्ग में, नेल्सन के वाल्टर सिसुलू जैसे नए दोस्त बने. सिसुलू एक अश्वेत सफाई महिला और एक श्वेत सरकारी अधिकारी के बेटे थे.

सिसुलू ने कई अलग-अलग नौकरियों कीं और काले श्रमिकों के लिए बेहतर वेतन के लिए हड़तालों का नेतृत्व किया था. सिसुलू ने नेल्सन को एक कानूनी फर्म में नौकरी दिलवाई. उन्होंने नेल्सन को कानून के छात्र के रूप में एक स्थानीय विश्वविद्यालय में दाखिला लेने के लिए भी प्रोत्साहित किया. नेल्सन ने 1944 में सिसुलू की चचेरी बहन एवलिन से शादी की और जल्द ही उनका एक बेटा थेम्बी हुआ.

उसी वर्ष नेल्सन अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस (ANC) में शामिल हो गए. कांग्रेस शब्द का मतलब यह नहीं था कि वो सरकार का हिस्सा थी. वो काले दक्षिण अफ्रीकी लोगों के अधिकारों के लिए काम करने वाले कई लोगों के एक समूह था. जब पहली बार 1912 में ANC की स्थापना हुई थी तब ANC ने "पासपोर्ट" कानूनों के खिलाफ विरोध का नेतृत्व किया था. लेकिन 1930 के दशक के अंत तक ANC शक्तिहीन हो गई. नेल्सन और उनके दोस्तों ने ANC के भीतर यूथ लीग नामक एक नया समूह शुरू किया. यूथ लीग ने सरकार को चुनौती देने के लिए ANC का नेतृत्व किया.

पहली बार ANC ने खुले तौर पर गोरे दक्षिण अफ्रीकी लोगों पर, काले दक्षिण अफ्रीकी लोगों के हितों को नजरंदाज करने का आरोप लगाया. नेल्सन, संघर्ष में इतने डूब गए कि उन्होंने शायद ही अपने युवा परिवार को कभी देखा हो.

शायद दक्षिण अफ्रीका में गोरी सरकार काले लोगों के लिए इससे और बदतर नहीं हो सकती थी. लेकिन 1948 में, सरकार ने कुछ और किया. दक्षिण अफ्रीका की सरकार ने अलग-अलग जातियों के लोगों को अलग-अलग रखने के लिए, "अलगाव" की एक क्रूर व्यवस्था शुरू की. अंग्रेजी में इस प्रणाली के लिए शब्द का अर्थ "अलगाव" था. दक्षिण अफ्रीकी डच भाषा (अफ्रीकांस) में इसे "रंगभेद" कहा जाता था.

अध्याय 3

रंगभेद

दक्षिण अफ्रीका में अधिकांश गोरे, ब्रिटिश या डच लोगों के वंशज थे. डच, दक्षिण अफ्रीकियों को अफ्रिकानर्स कहा जाता था. उन्होंने अपनी खुद की राजनीतिक पार्टी, नेशनल पार्टी बनाई, जिसे "नेट्स" कहा जाता था. 1948 में, जब नेल्सन उनतीस वर्ष के थे, तब "नेट्स" ने बहुत कम अंतर से सरकार का नियंत्रण जीत लिया.

"नेट्स" मानते थे कि काले लोग, गोरों से कमतर थे. रंगभेद के "नेट्स" के नियमों के अनुसार, सभी को उनकी जाति द्वारा लेबल किया जाता था: सफेद, काले, रंगीन (मिश्रित नस्ल के लोग), और भारतीय (दक्षिण एशियाई जो भारत से दक्षिण अफ्रीका गए थे). यदि किसी व्यक्ति की जाति के बारे में कोई संदेह होता, तो उस पर परीक्षण किये जाते थे - उसके बालों में पेंसिल घुसाकर देखा जाता था. अगर पेंसिल अटक जाती, तो वो व्यक्ति रंगीन होता था, सफेद नहीं. अलग-अलग नस्लों के बीच विवाह, अवैध था. बसों और स्कूलों को नस्ल के हिसाब से अलग-अलग किया गया था.

इनमें से कई कानूनों ने, लोगों के जीने के तरीके को पहले ही प्रतिबिंबित किया था, लेकिन एक बार जब वे आधिकारिक कानून बन गए, तो काले दक्षिण अफ्रीकी लोगों के लिए कुछ भी बदलना बहुत कठिन हो गया.

अधिकांश काले लोग, दक्षिण अफ्रीकी शहर की सीमाओं के बाहर बस्तियों यानि "टाउनशिप" कहे जाने वाले पड़ोसों में रहते थे.

उन झोंपड़ पट्टियों वाली बस्तियों में भीड़ होती थी. घर अक्सर साधारण झोंपड़ी होते थे जिनमें बिजली-पानी नहीं होता था. काले श्रमिक दिन के दौरान, शहर में गोरे लोगों के लिए काम करने के लिए टाउनशिप छोड़ते थे, और फिर रात में टाउनशिप लौटने के लिए मजबूर होते थे.

अमेरिका में अलगाव (रंगभेद)

"जिम क्रो" कानून 1677 से 1960 के दशक के मध्य तक अमेरिकी दक्षिण के अधिकांश हिस्सों में लागू किए गए थे. ये स्थानीय और राज्य के कानून, काले लोगों और गोरे लोगों को अलग-अलग रखते थे. कई मायनों में, ये कानून रंगभेद से बहुत अलग नहीं थे. "जिम क्रो" कानूनों के तहत, काले अमेरिकी, गोरे लोगों के लिए आरक्षित बेंचों पर नहीं बैठ सकते थे, काले बच्चे, गोरे स्कूलों में नहीं जा सकते थे, या यहाँ तक कि वे गोरों के नलों से पानी भी नहीं पी सकते थे. साथ में, काले लोगों से, गोरे लोगों के साथ एक निश्चित तरीके से व्यवहार करने की उम्मीद की जाती थी. एक काला व्यक्ति, सफेद व्यक्ति से हाथ नहीं मिला सकता था. काले लोगों को औपचारिक तरीके से गोरों को संबोधित करना पड़ता था, और उन्हें "मिस्टर" और "मिस" या "सर" और "मैम" कहकर बुलाना पड़ता था. जबकि गोरे लोग कालों को, केवल उनके पहले नाम से ही बुला सकते थे. सड़क पर, गोरे ड्राइवर्स को सभी चौराहों पर पहले जाने का मौका मिलता था!
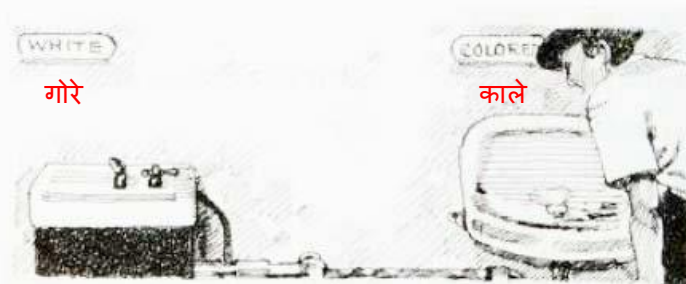
जब नेल्सन मंडेला और उनके दोस्तों को पता चला कि "नेट्स" चुनाव जीत गए हैं, तो वे बेहद दुखी हुए.

सालों तक "नेट्स" ने "ब्लैक डेंजर" और गोरों की श्रेष्ठता के बारे में प्रचार किया था. नेल्सन ने महसूस किया कि अब वो कभी भी सरकार के साथ काम नहीं कर सकते थे. उन्हें और बाकी लोगों को यूथ लीग के माध्यम से वापस लड़ना होगा. उन्हें सिविल डिसओबेडिएंस और विरोध द्वारा अपना कार्य करना होगा. सिविल डिसओबेडिएंस (सविनय अवज्ञा) का अर्थ होता था, शांतिपूर्वक कानूनों को तोड़ना और यह दिखाना कि वे कानून अनुचित थे. 1950 में गोरी सरकार ने सभी विरोधों को, चाहें वे शांतिपूर्ण हों, को अवैध बना दिया.

नेल्सन एक विरोध करने वाले नेता के रूप में उभरे - दूसरे शब्दों में, वो एक संकट पैदा करने वाले व्यक्ति थे. वो उस नाम के अनुरूप ही जी रहे थे जिसके साथ वो पैदा हुए थे – "पेड़ को हिलाने वाले".

नेल्सन और ओलिवर टैम्बो, जिन्हें वो पहली बार फोर्ट हेयर में मिले थे, ने एक अश्वेत कानूनी फर्म खोली. जोहान्सबर्ग में पहली बार उन्होंने अदालत में गरीब काले मुवक्किलों का प्रतिनिधित्व किया. उनके काले मुवक्किलों पर सभी प्रकार के अपराधों के आरोप लगाए गए थे. गोरे लोगों के लिए चिह्नित दरवाजे से निकलना भी अपराध था. बेरोज़गार होना गुनाह था, और गलत जगह नौकरी करना भी गुनाह था. नेल्सन ने उन लोगों का भी प्रतिनिधित्व किया जिन्हें उनके घरों से बेदखल कर दिया गया था क्योंकि उनके पड़ोस को, गोरों का क्षेत्र घोषित कर दिया गया था.

नागरिक अधिकारों के लिए बहस करने में नेल्सन अदालत कक्ष में काफी प्रखर थे. उनके पास एक प्राकृतिक अधिकार था. लेकिन जैसा कि उन्होंने अधिक-से-अधिक समय अपने मुवक्किलों के लिए लड़ने में बिताया, उन्होंने अपने परिवार के साथ कम-और-कम समय बिताया. जब वो अस्पताल में अपने नवजात बेटे, मैकगाथो को देखने गए, तो उसके पांच साल के बेटे थेम्बी ने पूछा, "मेरे डैडी कहाँ रहते हैं?"

अध्याय 4

अवज्ञा अभियान (सिविल डिसओबेडिएंस)

1950 में, नेल्सन को यूथ लीग का अध्यक्ष चुना गया. 1952 में ANC ने प्रधान मंत्री को एक पत्र भेजा जिसमें लिखा कि चूंकि ANC की सभी शिकायतें अनसुनी कर दी गई थीं, इसलिए वे कार्रवाई करने जा रहे थे. अगर सरकार 29 फरवरी तक रंगभेद के कानूनों को रद्द नहीं किया, तो अवज्ञा अभियान जारी रहेगा. दूसरे शब्दों में, काले लोग, रंगभेद के कानूनों को मानने से इंकार कर देंगे.

इस बार ANC की शिकायतों को नजरअंदाज नहीं किया गया. उन्हें खारिज कर दिया गया. सरकार ने चेतावनी दी कि कानून तोड़ने वालों को कड़ी सजा दी जाएगी. उन्हें गिरफ्तार किया जाएगा और उन्हें बड़ा जुर्माना भरने के लिए मजबूर किया जाएगा. फिर कुछ लोगों को पीटा भी गया.

नेल्सन ने विरोध का नेतृत्व किया. उन्होंने रंगभेद के कानूनों को शांतिपूर्वक तोड़ने के लिए धन जुटाया और स्वयंसेवकों को इकठ्ठा किया.

रंगभेद कानूनों को तोड़ने के लिए किसी को प्रोत्साहित करना गैरकानूनी था. हालांकि, नेल्सन और ANC के अन्य सदस्यों ने, 8,500 से अधिक स्वयंसेवकों की भर्ती की. कई लोगों ने ANC के समर्थन में हरे, सुनहरे और काले रंग के बाज़ूबंद पहने: हरा रंग, जमीन के लिए, सुनहरा रंग, धन या खुशहाली के लिए, और काला रंग लोगों के लिए.
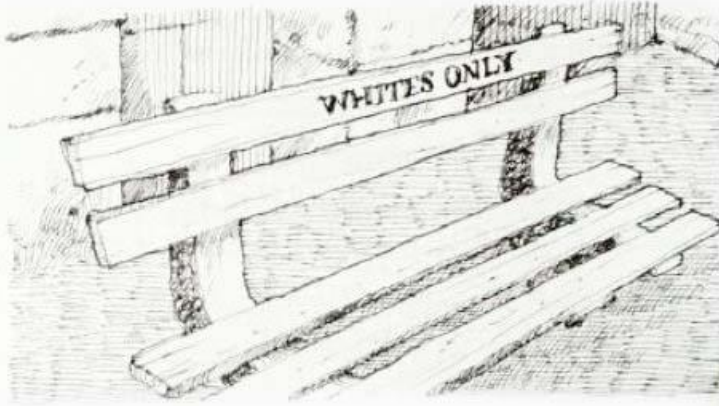
उदाहरण के लिए, कुछ स्वयंसेवकों को केवल गोरों की बेंचों पर बैठना था या फिर केवल गोरों की कतारों में खड़ा होना था. नेल्सन ने पूरे प्रांत में यात्रा की और श्रमिकों और ग्रामीणों से बातचीत की, और उन्हें अपने अधिकारों के लिए लड़ने के लिए प्रोत्साहित किया. लोग उस व्यक्ति का सम्मान करने लगे जिसे वे मंडेला कहते थे.

अवज्ञा अभियान, जो उस आंदोलन को नाम था, को शांतिपूर्ण होना जरूरी था. सरकार उनके साथ चाहे जो भी करे, प्रदर्शनकारी अपनी ओर से हिंसा नहीं करेंगे. चोट लगने के बाद भी, मंडेला ने चेतावनी दी, उन्हें अपने क्रोध और भय पर नियंत्रण रखना होगा. अगर उन्होंने हमला किया, तो सरकार आसानी से उन्हें कुचल देगी.

निष्क्रिय प्रतिरोध (पैसिव रेजिस्टेंस)

"निष्क्रिय प्रतिरोध" तब होता है जब लोग शांतिपूर्वक तरीके से अनुचित कानूनों को तोड़ते हैं. निष्क्रिय प्रतिरोध का उद्देश्य अन्यायपूर्ण कानूनों का पालन करने से इनकार करके अन्याय को समाप्त करना होता है. उसका प्रभावी उपयोग भारतीय नेता महात्मा गांधी ने 1920, 1930 और 1940 के दशक में अंग्रेजों से भारत की आजादी के अपने संघर्ष में किया था.

महात्मा गांधी

मार्टिन लूथर किंग जूनियर

इसका उपयोग 1950 और 1960 के दशक में अमेरिका में नागरिक अधिकार नेता डॉ. मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने, काले लोगों के लिए समानता जीतने के लिए किया था. उदाहरण के लिए, नागरिक अधिकार कार्यकर्ता उन लंच काउंटरों पर जाकर बैठ जाते थे जो केवल गोरों के लिए आरक्षित थे. वे तब भी बैठते रहते थे जब कोई उनको खाना नहीं देता था. वे तब तक नहीं हटते थे जब तक कि पुलिस आकर उन्हें घसीटकर नहीं ले जाती थी या फिर उन्हें जेल में नहीं डाल देती थी. शांतिपूर्ण प्रतिरोध, अन्यायपूर्ण कानूनों को बदलने का एक बहुत शक्तिशाली तरीका था. अगर समानता चाहने के लिए लोगों पर हमला किया जाता था या उन्हें गिरफ्तार किया जाता था तो जनमत लोगों के पक्ष में जा सकता था.

अवज्ञा अभियान कुचल दिया गया था. लेकिन उससे ANC में, हजारों नए सदस्य शामिल हुए थे. अश्वेत नागरिकों ने देखा था कि वे श्वेत सरकार के खिलाफ, एक-साथ खड़े हो सकते थे. उन्होंने यह भी देखा था कि सरकार उन्हें रोकने के लिए किस हद तक जा सकती थी. वे अब समझ गए थे कि समान अधिकार पाने के लिए उन्हें मरना पड़ सकता था. कई काले लोग, दक्षिण अफ़्रीका के लिए, ऐसा बलिदान देने को तैयार थे.

अन्य देशों ने इस बात को नोटिस किया और प्रदर्शनकारियों के साहस की प्रशंसा की. लेकिन दक्षिण अफ्रीका की सरकार ने उन पर कड़ा प्रहार किया. लोगों को गिरफ्तार किया गया और कभी-कभी पीटा भी गया. पुलिस ने घरों पर छापे मारे और अश्वेत नेताओं को गिरफ्तार किया. जहां तक नेल्सन मंडेला का सवाल था, उन्हें अब किसी भी समूह में शामिल होने, या किसी अखबार या पत्रिका के लिए कुछ भी लिखने की मनाही थी. वो किसी हवाईअड्डे या स्कूल में नहीं जा सकते थे. वो जोहान्सबर्ग में अपना पड़ोस भी नहीं छोड़ सकते थे.

1953 में "नेट्स" फिर से चुनकर आई. उन्होंने ऐसे मिशनरी स्कूलों को गैरकानूनी घोषित कर दिया, जिनमें युवा नेल्सन ने पढ़ाई की थी, क्योंकि इन स्कूलों में काले बच्चों को, सफेद बच्चों जैसे ही पढ़ाया जाता था. दूसरे शब्दों में, उन स्कूलों ने काले बच्चों के साथ बराबरी का व्यवहार किया था. सरकार ने एक शिक्षा अधिनियम पारित किया: सभी काले बच्चों को यह सिखाया जाएगा कि वे गोरों से हीन थे और वे केवल गोरों की सेवा करने के लिए ही बने थे. एक काले बच्चे को बस इतना ही सीखना जरूरी था जिससे वो चौकीदार या घर का नौकर बन सके.

1955 में ANC ने सभी दक्षिण अफ़्रीकी लोगों के अधिकारों के बिल पर सहमत होने के लिए लोगों की एक कांग्रेस बुलाई. उसमें हर जाति के लोगों का बुलाया गया.

नेल्सन के दोस्त वाल्टर सिसुलू ने बैठक आयोजित करने में मदद की. 25 और 26 जून को पूरे दक्षिण अफ्रीका से तीन हजार से अधिक प्रतिनिधि जोहान्सबर्ग के बाहर एक फुटबॉल मैदान में एकत्रित हुए. लोगों ने वहां पहुंचने के लिए मीलों का सफर तय किया. वे घास में कम्बल बिछाकर बैठ गए. सभी जातियों के लोगों ने "फ्रीडम ऑफ स्पीच" या "हमें बेहतर चाहिए" के बैनर अपने हाथों में उठाए थे. भीड़ के सामने एक चबूतरे पर चार तीलियों वाला एक पहिया था, जो एकता का प्रतीक था.

जनता की कांग्रेस

चार तीलियों वाला पहिया, मुख्य रंगभेद विरोधी राजनीतिक समूहों का प्रतिनिधित्व करता था, और पहिए के केंद्र में स्थित हब, ANC का प्रतिनिधित्व करता था.

अधिकारों के बिल को "फ्रीडम चार्टर" कहा गया था. चार्टर को अंग्रेजी और दो अफ्रीकी भाषाओं, षोसा और सेसोथो में जोर से पढ़ा गया.

नेल्सन के बचपन की आदिवासी सभाओं की तरह ही वहां हर बिंदु पर बहस हुई. तब तक माहौल खुशनुमा था जब तक बंदूकों से लैस पुलिस वहां नहीं पहुंची. पुलिस ने माइक्रोफोन ज़ब्त कर लिए और किसी को भी वहां से जाने से रोका. उन्होंने ओलिवर टैम्बो, वाल्टर सिसुलू और नेल्सन मंडेला सहित ANC के नेताओं को गिरफ्तार कर लिया.

उन नेताओं पर देशद्रोह का आरोप लगाया गया. दोषी पाए जाने पर उन्हें मौत की सजा हो सकती थी.

अध्याय 5

शार्पविल

मुकदमे के दौरान नेल्सन और उनके साथी नेताओं को जेल में नहीं रहना पड़ा. उन्हें जमानत पर छोड़ दिया गया. उन्हें सरकार को जुर्माना देना पड़ा और यह वादा करना पड़ा कि वे किसी दूसरे देश में नहीं भागेंगे. जब नेल्सन घर पहुंचे तो उन्होंने अपना खाली घर पाया.

उनकी पत्नी एवलिन घर छोड़कर चली गई थीं और वो तलाक चाहती थीं. नेल्सन ने बाद में कहा, "मैं संघर्ष को नहीं छोड़ सकता था, और वो चाहती थी कि मैं बाकी सब छोड़कर अपने और परिवार के साथ ही समय बिताऊं." 1958 में उनका तलाक हो गया था.

"देशद्रोह ट्रायल," 1956 से 1961 तक चला. जब नेल्सन अदालत में नहीं होते थे तो वो ओलिवर टैम्बो के साथ कानून के अभ्यास में, खुद को झोंक देते थे. पहले वर्ष के बाद टैम्बो पर आरोप अप्रत्याशित रूप से हटा लिए गए, इसलिए अब उन्हें अपराधों के आरोपी काले लोगों की मदद करने की अधिक स्वतंत्रता थी.

जैसे-जैसे महीने बीतते गए, अधिक प्रतिवादियों के खिलाफ आरोप हटा दिए गए. 1959 तक नेल्सन सहित 156 प्रतिवादियों में से केवल तीस अभी भी इस मुकदमे में आरोपों का सामना कर रहे थे.

मुकदमे के दौरान एक दिन नेल्सन ने, बस की प्रतीक्षा करती एक महिला को देखा. वो खूबसूरत थीं. नेल्सन उन्हें फिर से देखना चाहते थे, लेकिन वो यह नहीं जानते थे कि वह कौन थीं. कुछ हफ्ते बाद वही महिला उनके ऑफिस पहुंचीं. वो अपने भाई के साथ कानूनी मदद मांगने आई थीं.

उनका नाम नोमज़ामो विनिफ्रेड मदिकिज़ेला - विनी फॉर शॉर्ट था. उनके नाम का अर्थ था "वो जो प्रयास करती है." वो दक्षिण अफ्रीका के पहले अश्वेत अस्पताल में सामाजिक कार्यकर्ता थीं. नेल्सन उन्हे इंडियन भोजन खिलाने के लिए बाहर ले गए. नेल्सन की पूर्व पत्नी एवलिन के विपरीत, विनी को ANC और राजनीति पसंद थी. उस पहली डेट के बाद उन्होंने विनी के सामने शादी का प्रस्ताव रखा. और विनी ने उसे स्वीकार किया! उनका विवाह 14 जून, 1958 को हुआ. विनी को अपने पति को नागरिक अधिकारों के लिए भाषण देते या बहस करते देखना अच्छा लगता था. उन्होंने भी विरोध प्रदर्शनों में भाग लिया और उन्हें गिरफ्तार भी किया गया. 1959 में उनकी और नेल्सन की एक बच्ची, ज़ेनानी (जिसे ज़ेनी कहा जाता है) हुई.

इस बीच, ANC बदल रहा था. नेल्सन ने एक ऐसे दक्षिण अफ्रीका का सपना देखा था जहां गोरे और काले लोग दोस्तों के रूप में एक साथ रह सकें. उन्होंने सोचा कि ANC को उन गोरे नागरिकों तक पहुंचना चाहिए जो रंगभेद के खिलाफ थे. लेकिन ANC में कई काले कार्यकर्ता, गोरे लोगों के साथ काम करना नहीं चाहते थे. उन्हें गोरे, दक्षिण अफ्रीकी लोगों पर भरोसा नहीं था.

रॉबर्ट सोरुकेवे

वे लोग, श्वेत रंगभेदी सरकार से समझौता नहीं करना चाहते थे. 1959 में एक नागरिक अधिकार नेता रॉबर्ट सोरुकेवे ने ANC छोड़ दी. उन्होंने पैन अफ्रीकनिस्ट कांग्रेस, PAC की स्थापना की. उनका नारा था "हमारी ज़मीन."

नेल्सन ने सोचा था कि उससे अधिक फायदा नहीं होगा लेकिन वो लोगों को खतरे में डाल देगा.

PAC के अभियान में भाग लेने वाले अधिकांश लोगों को बिना हिंसा के गिरफ्तार कर लिया गया. लेकिन जोहान्सबर्ग से लगभग पचास मील दूर शार्पविले शहर के लोगों को गिरफ्तार नहीं किया गया. 21 मार्च, 1960 को शार्पविले के काले लोग, "पासबुक" कानूनों का विरोध करने के लिए एकत्रित हुए.

मार्च 1960 में, PAC ने बिना "पासबुक" वाले अश्वेतों को पुलिसकर्मियों से संपर्क करने और जानबूझकर गिरफ्तार होने के लिए कहा. उन्हें उम्मीद थी कि जेलें इतनी भर जाएंगी कि फिर सरकार के पास उन कानूनों को रद्द करने के अलावा और कोई विकल्प ही नहीं बचेगा.

पुलिस ने कहा कि भीड़ की संख्या बीस हजार थी. कुछ अन्य के अनुसार भीड़ पाँच हज़ार के करीब थी. प्रत्यक्षदर्शियों ने कहा कि भीड़ शांत थी. उनके पास निश्चित रूप से कोई बंदूकें या अन्य हथियार नहीं थे. पुलिस ने कहा कि लोग लाठी और पत्थरों से लैस थे. शार्पविले अधिकारियों का समर्थन करने के लिए और अधिक पुलिस अधिकारी वहाँ पहुंचे, जिससे सशस्त्र पुलिस अधिकारियों की कुल संख्या तीन सौ हो गई.

पुलिस ने PAC नेताओं को गिरफ्तार करने की कोशिश की. भीड़ आगे बढ़ी. पुलिस ने उन्हें पीछे धकेला. तभी दो गोलियां चलने की आवाज आई. उन शॉट्स के बाद चालीस सेकंड तक गोलीबारी हुई. पुलिस ने भीड़ पर सात सौ से अधिक गोलियां चलाईं. लोग चिल्लाए और दौड़े. बच्चों ने खुद को बचाने के लिए अपने सिरों पर हाथ रखा.

जब तक शूटिंग रुकी, तब तक 79 लोग मर चुके थे, और अन्य 180 गंभीर रूप से घायल हुए थे, जिनमें 31 महिलाएं और 19 बच्चे शामिल थे. अधिकांश मृतक पुलिस से बचकर भाग रहे थे. उन्हें पीठ में गोली मारी गई थी. लेकिन एक भी पुलिसकर्मी को गंभीर चोट नहीं आई थी.

गोरी दक्षिण अफ्रीकी सरकार के एक सदस्य ने इस घटना को "सामान्य पुलिस कार्रवाई" बताया. बाकी दुनिया ने इसे नरसंहार कहा.

अध्याय 6

भूमिगत

शार्पविले की तस्वीरें दुनिया भर में फैली गईं. अब दुनिया को रंगभेद का असली चेहरा नज़र आया. दक्षिण अफ्रीका के बाहर हत्याओं की निंदा की गई. जो कुछ हुआ उसके लिए संयुक्त राष्ट्र ने दक्षिण अफ्रीकी सरकार को दोषी ठहराया. विदेशी व्यवसायों ने अपने निवेश धन को, दक्षिण अफ्रीका से बाहर निकालना शुरू किया.

सरकार ने आपातकाल की स्थिति घोषित की. अब पुलिस, सरकार के खिलाफ कार्रवाई करने के संदेह में, किसी को भी गिरफ्तार कर सकती थी—उसके लिए उसे किसी भी सबूत की जरूरत नहीं थी. सभी सार्वजनिक बैठकें अब अवैध थीं.

शार्पविले का नेल्सन और बाकी ANC पर बड़ा प्रभाव पड़ा. नेल्सन और ओलिवर टैम्बो ने 1959 में इस बारे में चर्चा की थी कि इस तरह के संकट की स्थिति में उन्हें क्या करना चाहिए? उन्होंने सोचा कि उनमें से एक को दुनिया भर में अपने मिशन के लिए समर्थन हासिल करने के लिए दक्षिण अफ्रीका छोड़ देना चाहिए. लेकिन दक्षिण अफ्रीका में भी मजबूत ANC नेताओं की जरूरत थी. उन्होंने फैसला किया कि टैम्बो को दक्षिण अफ्रीका छोड़ना चाहिए और नेल्सन को दक्षिण अफ्रीका में ही रहना चाहिए.

अगले दिन पुलिस मंडेला के दरवाजे पर पहुंची. एक गर्भवती विनी और छोटी ज़ेनानी के सामने, उन्होंने नेल्सन को गिरफ्तार कर लिया गया.
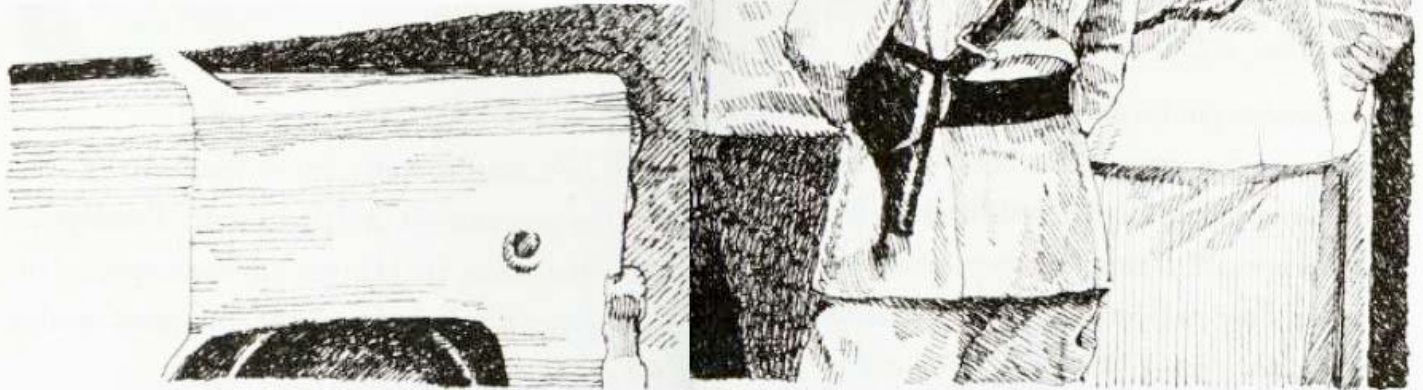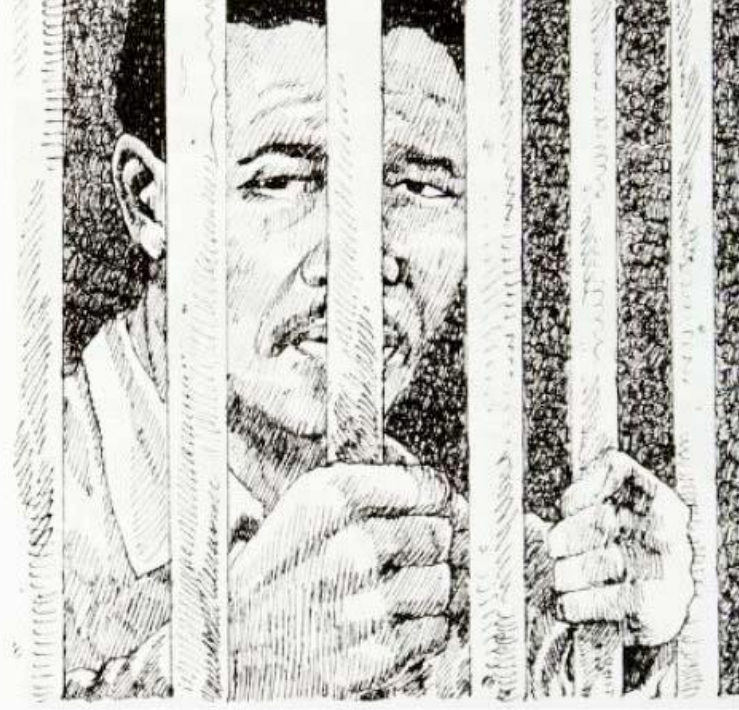
बिना किसी अपराध या आरोप के नेल्सन पांच महीने तक जेल में रहे. उनकी दूसरी बेटी, ज़िंद्ज़िस्वा (उसे जिन्दज़ी कहते थे) का जन्म दिसंबर 1960 में हुआ था. आखिरकार, उन पर सबसे गंभीर अपराध का आरोप लगाया गया - सरकार को उखाड़ फेंकने की कोशिश करना का.

29 मार्च, 1961 को, भयानक शार्पविले हत्याओं के एक साल बाद, नेल्सन मंडेला और देशद्रोह के मुकदमे के अन्य प्रतिवादियों को आखिरकार दोषी नहीं पाया गया. तीन-न्यायाधीशों के पैनल के मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि हालांकि उन्होंने कानून तोड़ा था, लेकिन उन्हें इस बात का कोई सबूत नहीं मिला कि वे सरकार को उखाड़ फेंकने की कोशिश कर रहे थे.

उसी महीने में, दक्षिण अफ्रीका के पीटरमैरिट्सबर्ग शहर में, एक नागरिक-अधिकार सम्मेलन आयोजित किया गया. नेल्सन ने अब भूमिगत होने की योजना बनाई. अपने परिवार को छोड़कर, वो अपने दोस्तों के साथ जाकर छिप गए. वो दिन में सोते थे और रात में घूमते थे. उन्होंने पत्रकारों से गुपचुप तरीके से मुलाकात की. साक्षात्कारों में, उन्होंने बताया कि शार्पविले ने, विरोध के बारे में उनके सोचने के तरीके को बदल दिया था. उन्होंने कहा, "अब हम अहिंसक नीति के इस अध्याय बंद कर रहे हैं." अश्वेत दक्षिण अफ्रीकियों ने रंगभेद को समाप्त करने के लिए अहिंसा का प्रयास किया था. लेकिन शार्पविले जैसी घटनाओं से पता चला कि उसने काम नहीं किया था.

लेकिन दक्षिण अफ्रीकी सरकार को, शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों को मारने में कोई समस्या नहीं थी. नेल्सन और ANC ने रणनीति बदली. अब उन्हें सशस्त्र प्रतिरोध की आवश्यकता थी, इसलिए एक नया समूह गठित किया गया. इसे या "स्पीयर ऑफ़ द नेशन" (देश का भाला) नाम दिया गया. नेल्सन उसके कमांडर-इन-चीफ थे. हालाँकि नया समूह लोगों को मारना नहीं चाहता था, लेकिन वो बिजली संयंत्रों, रेलवे और टेलीफोन लाइनों को तोड़ने और नष्ट करने को तैयार था.

देश के चलन में बाधा डालकर, "देश का भाला" संगठन श्वेत सरकार को रंगभेद समाप्त करने के लिए मजबूर कर रहा था.

नेल्सन, वाल्टर सिसुलू जैसे अन्य ANC नेताओं के साथ रिवोनिया में, लिलीसलीफ फार्म में छिप गए. गिरफ्तारी से बचने के लिए उन्होंने अपना भेष बदल लिया. एक दिन नेल्सन कामचोर लड़का बने, अगले दिन एक रसोइया. एक दिन उन्होंने एक माली का भेष बनाया और दूसरे दिन मोतियों का चोग़ा पहनकर एक आदिवासी ओझा बन गए. नेल्सन कई बार बाल-बाल बचे. एक बार उन्हें एक काले गार्ड ने देख लिया - लेकिन उसने नेल्सन को ANC का "थम्स-अप" सिग्नल दिया और फिर वो दूसरी तरफ मुड़ गया.

पहरेदार कोई भी रहा हो, वो चाहता था कि नेल्सन आज़ाद रहें. सरकार, नेल्सन के चकमों से परेशान हो चुकी थी.

उसके बाद नेल्सन की किस्मत ने उनका साथ छोड़ दिया. 5 अगस्त 1962 को पुलिस ने एक कार को रोका. यात्री की सीट पर ड्राइवर के वेश में एक काला आदमी बैठा था. वो नेल्सन ही थे. उन्होंने पुलिसकर्मियों को समझाने की कोशिश की कि उनका नाम डेविड मोत्समयी था. लेकिन पुलिस को उन पर विश्वास नहीं हुआ. पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया.

किसी तरह पुलिस को पता चल गया था कि उस दिन नेल्सन की कार वहाँ से होकर जाने वाली थी. नेल्सन को किसने धोखा दिया, यह किसी को नहीं पता. नेल्सन को कड़ी मेहनत के साथ पांच साल की जेल की सजा सुनाई गई. जैसे ही पुलिस नेल्सन को लेकर गई, भीड़ चिल्लाई, "संघर्ष करो, मंडेला!"

अध्याय 7

रॉबेन द्वीप

जब नेल्सन जेल में थे, तब पुलिस ने लिलीसलीफ में तलाशी ली और वाल्टर सिसुलू और "स्पीयर ऑफ द नेशन" के अन्य सदस्यों को गिरफ्तार किया. सौभाग्य से तब ओलिवर टैम्बो दक्षिण अफ्रीका के बाहर थे. जब उन्होंने गिरफ्तारियों के बारे में सुना, तो वो समझ गए कि अब वो वो अपने वतन वापस नहीं जा सकते थे. लेकिन वो हमेशा की तरह अपने दोस्तों की मदद करने के लिए दृढ़ संकल्पित थे.

अक्टूबर 1963 में नेल्सन पर फिर से मुकदमा चला. उन पर 1961 और 1963 के बीच तोड़फोड़ के 222 कृत्यों का आरोप लगाए गए. तोड़फोड़ का मतलब चीजों को नष्ट करना होता है. उदाहरण के लिए, "स्पीयर ऑफ द नेशन" ने, पुलिस स्टेशनों और अन्य सरकारी इमारतों में विस्फोट लगाने की योजना बनाई थी. राज्य ने मंडेला को अधिकतम दंड की सजा सुनाई: फांसी द्वारा मौत की सजा.

कोर्ट रूम तनावपूर्ण था. नेल्सन और उनके दोस्तों के खिलाफ वकीलों को केस में अपने तर्क पेश होने में पांच महीने का समय लगा.

फिर, अप्रैल में, नेल्सन बोलने के लिए खड़े हुए. उनकी बुजुर्ग मां और उनकी पत्नी गैलरी से उन्हें देख रही थीं. उन्होंने अपने बचाव में कोई सबूत पेश नहीं किया. इसके बजाय, उन्होंने एक बयान दिया. "हम मानते हैं कि दक्षिण अफ्रीका उन सभी लोगों का है जो उसमें रहते हैं," उन्होंने कहा, "और वो देश किसी एक समूह का नहीं है, चाहे वो काले हो या गोरे."

नेल्सन ने अन्यायपूर्ण कानूनों, भीड़-भाड़ वाली बस्तियों में जीवन, और सरकार के क्रूर कानूनों के बारे में बातें की. उन्होंने मतदान के अधिकार, शिक्षा के अधिकार और बुनियादी सम्मान के साथ व्यवहार के अधिकार पर बातें कीं. घंटों तक अदालत मंत्रमुग्ध होकर उन्हें सुनती रही. "मैंने खुद को अफ्रीकी लोगों के इस संघर्ष के लिए समर्पित कर दिया है ..." नेल्सन ने कहा. "यह एक आदर्श है जिसे मैं ज़िंदा रहते हुए हासिल करने की आशा करता हूं. लेकिन अगर जरूरत पड़ी तो वो एक ऐसा आदर्श है, जिसके लिए मैं मरने के लिए भी तैयार हूं."

ट्रायल के बाद, न्यायाधीश ने नेल्सन और वाल्टर सिसुलु सहित अन्य प्रतिवादियों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई.

नेल्सन और सिसुलू को केप टाउन के तट पर रॉबेन द्वीप पर एक अधिकतम-सुरक्षा वाले जेल में भेज दिया गया. द्वीप के एक मील के दायरे में किसी भी जहाज को आने की अनुमति नहीं थी. वहां से बचना नामुमकिन था. मंडेला को उस कोठरी में ले जाया गया जो अगले अठारह वर्षों के लिए उनका घर बनी. वो कोठरी आठ फीट चौड़ी और सात फीट लंबी थी, और उसमें चालीस वाट के एक लाइटबल्ब जलता था.
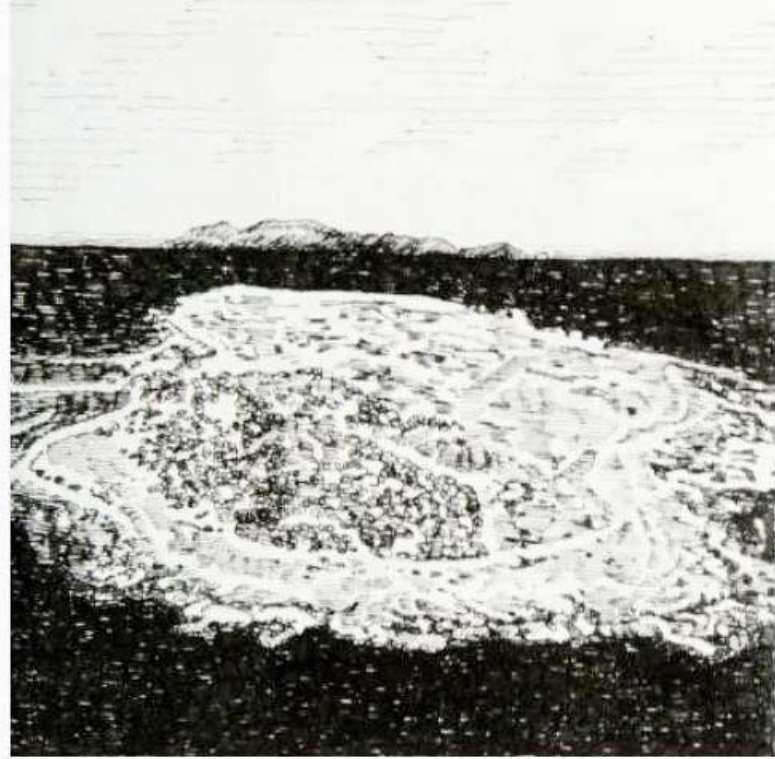
बल्ब दिन-रात जलता रहता था. मंडेला कमरे को अपने तीन क़दमों में पार कर सकते थे. उनके सोने के लिए एक चटाई थी और तीन कम्बल थे. कम्बल इतने पतले थे कि उनके आर-पार दिखाई देता था. शौचालय के लिए उन्हें एक लोहे की एक छोटी बाल्टी मिली थी.
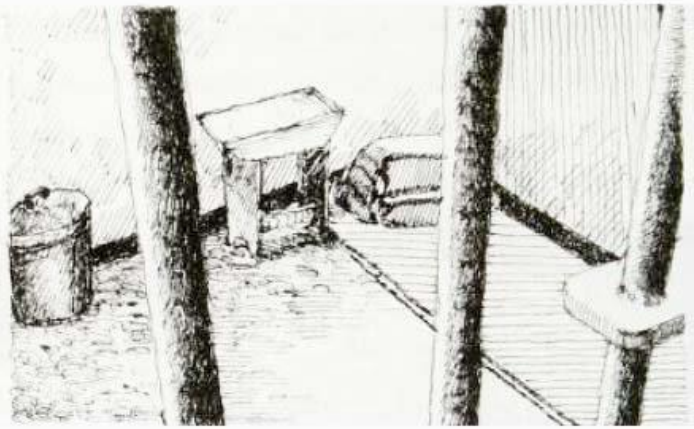
रॉबेन द्वीप के सभी कैदी अश्वेत थे. सभी पहरेदार गोरे थे. मंडेला अपने परिवार को पत्र लिख सकते थे और हर छह महीने में केवल एक बार परिवार से पत्र प्राप्त कर सकते थे. नेल्सन को कोई भी पत्र पढ़ने की अनुमति देने से पहले, जेल अधिकारी उस पत्र में से वो सबकुछ काट देते थे जो उन्हें लगता था कि मंडेला को नहीं पढ़ना चाहिए. अक्सर इतने सारे शब्द कटे होते थे, कि पत्र मुश्किल से ही समझ में आता था.

नेल्सन ने कई सालों तक विनी को नहीं देखा था. उन्हें अपनी मां या और सबसे बड़े बेटे थेम्बी के अंतिम संस्कार में भी जाने की अनुमति नहीं मिली थी. 1969 में, थेम्बी की एक कार दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी.

हर दिन, नेल्सन साढ़े पाँच बजे उठते थे. वो ठंडे पानी से नहाते और दाढ़ी बनाते थे. फिर वो अपनी लोहे की बाल्टी खाली करते थे. उन्हें एक दिन में आठ वर्ग फ़ीट टॉयलेट पेपर मिलता था. नाश्ते में उन्हें बेस्वाद दलिया मिलता था. फिर वो काम पर चले जाते थे — वो या तो वहीं आंगन में चट्टानें तोड़ते थे या फिर चूना पत्थर की खदान में काम करते थे. वो गैंती और फावड़ों से चट्टानों के भारी स्लैब खोदते थे और उन्हें उठाकर ट्रकों में लोड करते थे.

चूने पत्थर पर धूप इतनी तेज़ चमकती थी कि उससे उनकी आंखों की रोशनी खराब हो गई. गर्मियों में वहां का तापमान उबलने लगता था; सर्दी, ठंड, हवा और चूने की धूल उनकी आँखों में चुभती थी और उनके हाथों में छाले पड़ गए थे.

नेल्सन को बाहरी दुनिया के बारे में जानकारी नए कैदियों से मिलती थी. कभी-कभी गार्ड उनकी चटाई पर अखबार की कतरनें छोड़ जाता था, ताकि उन्हें पता चल सके कि जोहान्सबर्ग में विनी को परेशान कितना किया जा रहा था और उन्हें जेल में डाल दिया गया था. सरकार ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वो मंडेला को यह दिखाना चाहती थी कि वो अपने परिवार की मदद करने में कितने असमर्थ और शक्तिहीन थे.

विनी मंडेला

विनी मंडेला ने रंगभेद को समाप्त करने के लिए अपने पति की प्रतिबद्धता को साझा किया. जेल में बिताए गए नेल्सन के वर्षों के दौरान, विनी को अक्सर जेल में डाला गया, पीटा गया और परेशान किया गया. इससे वो बहुत गुस्सा हुईं और उन अनुभवों के कारण उनके लिए हिंसा, दुश्मनों से निपटने का एक स्वीकार्य तरीका बना. उन पर अपहरण और हत्या का मुकदमा चला. कई लोगों ने उनकी आक्रामक शैली को स्वीकार नहीं किया, लेकिन वो फिर भी लगातार एक जानी-मानी, विवादास्पद, सार्वजनिक हस्ती बनी रहीं. हालाँकि कुछ लोगों ने उन्हें "राष्ट्र की माँ" बुलाया, लेकिन उनका समझौता करने में, या धीमी गति से समानता लाने में कोई रूचि नहीं थी. उनके मत और तौर-तरीके नेल्सन मंडेला से इतने अलग हो गए थे कि अंत में उन्होंने 1996 में तलाक ले लिया.

अध्याय 8

मंडेला को मुक्त करो

रॉबेन द्वीप में जेल के वर्षों ने, नेल्सन की आत्मा को कभी नहीं तोड़ा. उन्होंने कभी भी यह मानना बंद नहीं किया कि दक्षिण अफ्रीका बदल सकता था. वो रोज सुबह व्यायाम करते और शाम को पढ़ते थे. उन्होंने मेल के जरिए कानून की पढ़ाई की. उन्होंने अफ्रिकांस इतिहास और भाषा सीखी. जेल में उनके लिए सबसे बुरा समय वो था जब उन्हें पढ़ने नहीं दिया गया था. वो पाबंदी चार साल तक चली. लेकिन नेल्सन दृढ़ निश्चयी थे, और जब उन्होंने अपनी कानून की इंटरमीडिएट परीक्षा पास की तब वो पैंतालीस वर्ष के थे.

जेल जीवन के बारे में एक खुशी की बात भी थी: दोस्ती. कैदियों को बात करने की मनाही थी, लेकिन नेल्सन ने रास्ते खोजे. जब वे खदानों में काम करते थे तो वे एक-दूसरे से फुसफुसाते थे और गंदे बर्तनों में छिपाकर गुप्त नोट्स का आदान-प्रदान करते थे.

यहां तक कि उन्होंने काम बहुत धीमे किया और भूख हड़ताल भी की. मंडेला भले ही जेल में थे, लेकिन वे अभी भी पेड़ को हिला सकते थे!

जेल में अपने सभी दोस्तों में, वाल्टर सिसुलू पर नेल्सन, सबसे अधिक भरोसा करते थे. सिसुलू, नेल्सन के साउंडिंग बोर्ड थे. नेल्सन ने सिसुलू के साथ अश्वेत समानता प्राप्त करने के लिए तमाम मुद्दों पर चर्चा की थी. मंडेला ने एक बार कहा था, "हम मौत की घाटी में एक-दूसरे के घावों को सहलाते हुए कंधे-से-कंधा मिलाकर चले, और जब हमारे कदम लड़खड़ाए तो हमने एक-दूसरे को सहारा दिया."

मंडेला ने उस कागज पर पांच सौ पन्नों की आत्मकथा भी लिखी जो तस्करी के ज़रिए जेल में पहुंचा था.

उन्होंने प्लास्टिक में लपेटकर और कोको के डिब्बों में छिपाकर उन पन्नों को जेल के पूरे प्रांगण में गाड़ दिया था. उन्होंने अन्य कैदियों को भी पढ़ने और सीखने के लिए प्रोत्साहित किया. और यद्यपि नेल्सन एक बड़े नेता थे, लेकिन युवा कैदी उनकी विनम्रता को देखकर चकित रह जाते थे.

नेल्सन के लिए जेल का जीवन बहुत कठिन था. जब बीमारी के कारण वो खदान में काम नहीं कर पाए तब उन्हें अपने दोस्तों से अलग एक गीली, ठंडी, एकांत कोठरी में बंद कर दिया गया. फिर उन्हें केवल चावल और पानी ही खाने को दिया गया.

इस बीच, ओलिवर टैम्बो अभी भी दुनिया भर की यात्रा कर रहे थे. वे दुनिया में सभी को मंडेला, और रंगभेद के खिलाफ लड़ाई के बारे में बता रहे थे. उन्होंने नागरिक अधिकार समूहों और सरकारी नेताओं से मुलाकात की. उन्होंने ANC के अंतर्राष्ट्रीय गुटों की स्थापना की. उसके बाद विश्व नेताओं ने, दक्षिण अफ्रीका के जाने-पहचाने चेहरे के रूप में, मंडेला की रिहाई की मांग शुरू कर दी.

टैम्बो ने पड़ोसी देशों तंजानिया और जाम्बिया में क्रांतिकारी लड़ाकों के प्रशिक्षण शिविर भी स्थापित किये. वो उन सेनानियों को दक्षिण अफ्रीका द्वारा नियंत्रित अंगोला के बॉर्डर में ले गए.

उसने दक्षिण अफ्रीका की श्वेत सरकार को एक संदेश भेजा: ANC युद्ध के लिए तैयार थी.

1976 में कैदियों के मंत्री ने मंडेला की सजा कम करने की पेशकश की, अगर मंडेला सरकार की नवीनतम परियोजना, "होमलैंड सिस्टम" को अपना समर्थन दें. सरकार अपने एजेंडे के समर्थन के लिए मंडेला के प्रभाव का उपयोग करना चाहती थी. लेकिन मंडेला ने मना कर दिया. सरकार ने मंडेला से अपने दोस्तों को छोड़ने को कहा और उसके लिए उन्हें कई प्रलोभन भी दिए. लेकिन मंडेला ने फिर से मना कर दिया.

मंडेला अट्ठावन वर्ष के थे जब सरकार ने यह घोषणा करते हुए एक कानून पारित किया कि सभी स्कूलों को गणित और विज्ञान जैसे कठिन विषयों को अफ्रीकांस भाषा में पढ़ाया जाएगा. अधिकांश काले बच्चे अफ्रीकांस भाषा नहीं समझते थे, और वो उसे अपने उत्पीड़कों और मालिकों की भाषा मानते थे. फिर बच्चे कैसे कुछ सीखेंगे? एक बार फिर, सरकार काले छात्रों को एक अच्छी शिक्षा से वंचित करने के तरीके खोज रही थी.

"होमलैंड सिस्टम"

1970 में दक्षिण अफ्रीका की सरकार ने नस्ल के आधार पर दक्षिण अफ्रीका को अलग-अलग राज्यों में बांट दिया. नई व्यवस्था के तहत, जिसे "होमलैंड सिस्टम" कहा जाता था, काले लोग अब दक्षिण अफ्रीका के नागरिक नहीं होंगे. वे सिर्फ अपना काम करने के लिए अस्थायी वर्क परमिट पर ही दक्षिण अफ्रीका आ सकेंगे. अश्वेत लोगों ने उन्हें सौंपी गए "होमलैंड"में रहने से इनकार कर दिया— वे ऐसे स्थान थे, जहां वे पहले कभी नहीं गए थे— लोगों को उनकी इच्छा के विरुद्ध स्थानांतरित किया जा रहा था. लेकिन इन "स्वतंत्र देशों" को दुनिया के बाकी देशों द्वारा आधिकारिक तौर पर कभी भी मान्यता नहीं मिली.

दक्षिण अफ्रीका के "होमलैंड"

सोवेटो टाउनशिप के लोगों ने विरोध प्रदर्शन आयोजित किया. उसमें दस हजार विद्यार्थियों ने भाग लिया. उनमें से कुछ केवल छह साल के थे.

फिर भी पुलिस ने उन पर फायरिंग की. सोवेटो की बस्ती एक युद्ध का मैदान बन गई. एक बार फिर सड़कें लाशों से भर गईं, जिनमें कई बच्चे थे.

फिर उनके माता-पिता भी लड़ाई में शामिल हुए. सोवेटो में विरोध की आग, जल्द ही अन्य कस्बों में भी फैल गई. सोलह महीने तक दंगे चलते रहे पर उसके बाद उन्हें कुचल दिया गया. दंगों में लगभग एक हजार लोग मारे गए और 5,980 गिरफ्तार किए गए. लेकिन पुलिस ने अपना एक भी आदमी नहीं खोया.

रॉबेन द्वीप पर अब इतने नए कैदी हो गए थे कि उनसे काम कराने के बजाय उन सभी को जेल कोठरियों में बंद रखना आसान था.

स्टीव बीको

हालांकि, बहुत से नागरिक-अधिकार नेताओं को जेल भेजा गया था, लेकिन उससे कोई ख़ास फर्क नहीं पड़ा. स्टीव बीको जैसे नए नेता उनकी जगह लेने के लिए हमेशा आगे आते रहे. बीको ने काले दक्षिण अफ़्रीकी लोगों को स्वतंत्र बनाने के उद्देश्य से एक स्वास्थ्य क्लिनिक, सामुदायिक कार्यक्रमों के साथ-साथ एक व्यावहारिक कौशल केंद्र की स्थापना की थी.

स्टीव बीको को उनके काम के लिए कई बार गिरफ्तार किया गया था. 1977 में वो पच्चीस दिनों तक पुलिस हिरासत में रहे. फिर पुलिस ने घोषणा की कि भूख हड़ताल पर जाने से जेल की कोठरी में उनकी मृत्यु हो गई थी. (भूख हड़ताल तब की जाती है जब कोई अन्याय का विरोध करने के लिए खाने से इंकार कर देता है.)

सच्चाई यह थी कि बीको को बेरहमी से पीटा गया था और फिर उन्हें कोठरी में जंजीर से बांधकर मरने के लिए छोड़ दिया गया था. उनकी हत्या का आरोप कभी किसी पर नहीं लगा.

पुलिस ने 25 सितंबर, 1977 को ईस्टर्न केप के किंग विलियम टाउन में स्टीव बीको के अंतिम संस्कार में शामिल होने से लोगों को रोकने की कोशिश की.

लेकिन बीस हज़ार अश्वेत नागरिक और कई गोरे लोग भी स्टीव बीको को सम्मान देने के लिए इकट्ठे आए. अमेरिका समेत बारह अन्य पश्चिमी देशों ने भाग लेने के लिए अपने प्रतिनिधियों को भेजा. कई देशों में प्रदर्शनकारी चाहते थे कि उनकी सरकारें दक्षिण अफ्रीका के साथ व्यापार बंद कर दें.
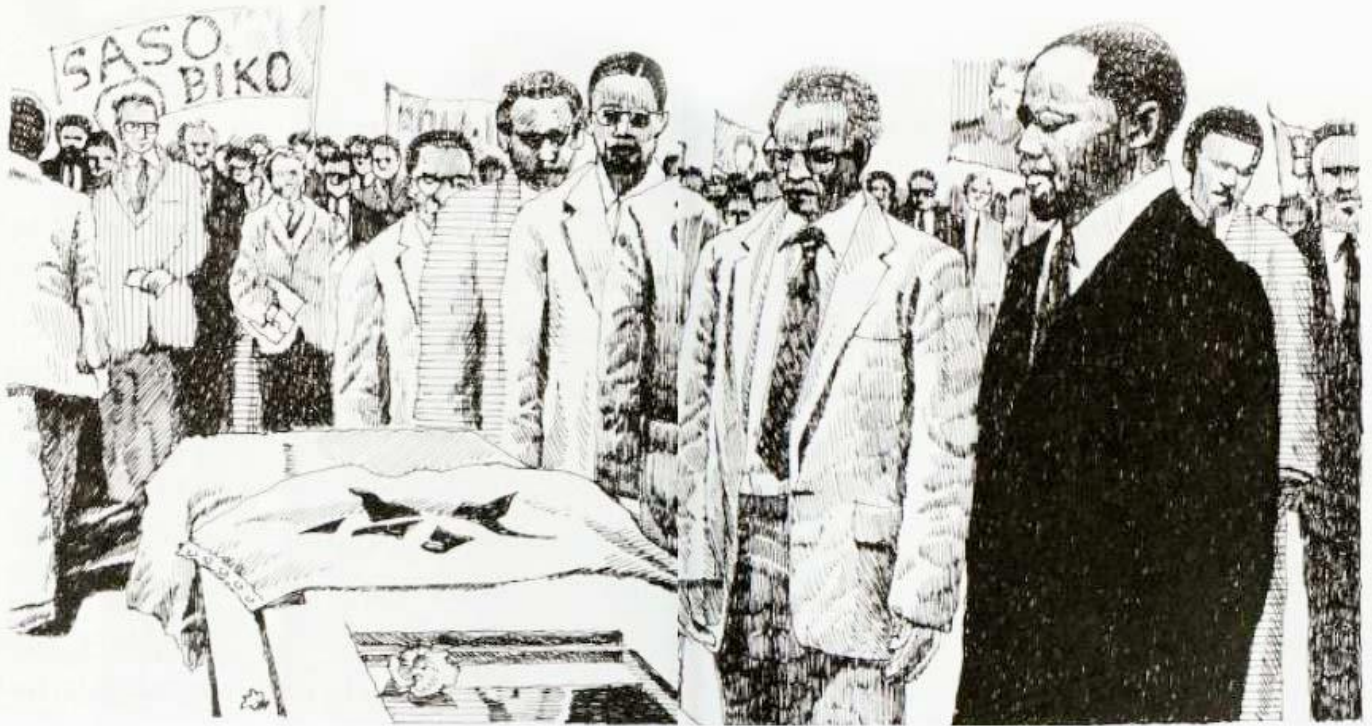
गोरी दक्षिण अफ़्रीकी सरकार पर धीरे-धीरे लोगों पर दबाव बढ़ रहा था. नेल्सन मंडेला एक बेहतर दक्षिण अफ्रीका की आशा के प्रतीक बन गए थे. सभी कार्यकर्ताओं में वही सबसे प्रसिद्ध थे. 1980 में, जोहान्सबर्ग "संडे पोस्ट", एक अश्वेत अखबार, ने नेल्सन मंडेला को रिहा करने के लिए एक याचिका छापी. उसका शीर्षक था: मंडेला को मुक्त करो.

अध्याय 9

आपातकालीन स्थिति

दक्षिण अफ्रीका दिवालिया हो रहा था, क्योंकि बहुत सारे विदेशी व्यवसायों ने दक्षिण अफ्रीका से अपने आर्थिक संबंध तोड़ दिए थे. दंगे नियमित रूप से भड़कने लगे. इसलिए सरकार ने कुछ बदलाव भी किए. उन्होंने सार्वजनिक बसों और थिएटरों में रंगभेद ख़त्म कर दिया और कुछ टाउनशिप को बिजली भी दी. उन्होंने भारतीय और "अश्वेत" नागरिकों को सरकार में प्रतिनिधित्व करने के लिए अपने लोगों का चुनने दिया - लेकिन संसद के उस कक्ष में नहीं जो श्वेत नागरिकों का प्रतिनिधित्व करता था. कई गोरे मतदाता इन परिवर्तनों से नाराज़ थे, जबकि कई गैर-गोरे लोगों को उसमें कुछ ख़ास बदलाव नज़र नहीं आया.

लेकिन नेल्सन मंडेला के जीवन में कुछ अंतर आया. अप्रैल 1982 में, मंडेला को, केप टाउन के पास पोल्समूर जेल में ले जाया गया.

यह मंडेला के जेल जाने के बाद पहली बार उनके शब्दों को सार्वजनिक रूप से सुनाया जा रहा था.

मंडेला ने लिखा: "केवल स्वतंत्र लोग ही मोल-तोल कर सकते हैं; एक कैदी कोई भी समझौता नहीं कर सकता है. आपकी और मेरी स्वतंत्रता को अलग नहीं किया जा सकता है." नेल्सन अपनी स्वतंत्रता तब तक स्वीकार नहीं करेंगे जबतक रंगभेद समाप्त नहीं होता. और वो किसी भी हालत में रंगभेद का समर्थन नहीं करेंगे.
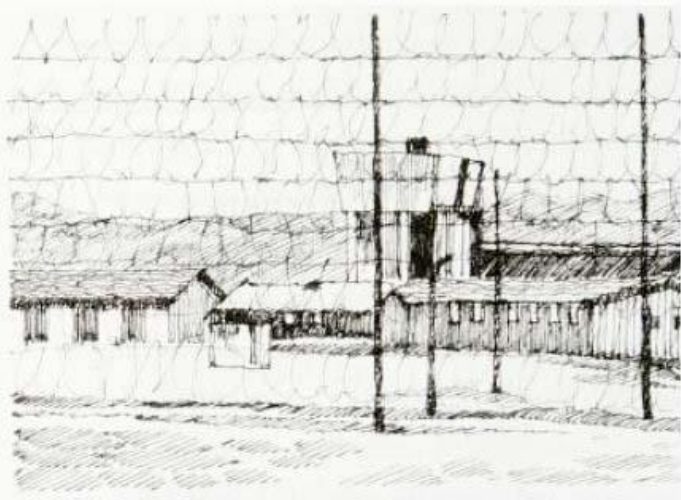
दशकों में पहली बार मंडेला के पास एक बिस्तर था. कई लोगों का मानना था कि मंडेला को, उनके रॉबेन द्वीप के अधिकांश मित्रों से, अलग करने के लिए ही स्थानांतरित किया गया था. सरकार को लगा कि उससे मंडेला का प्रभाव कम हो जाएगा, और वो ज़्यादा परेशानी पैदा नहीं कर पाएंगे.

दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति ने कहा कि अगर मंडेला रंगभेद को खत्म करने के लिए हिंसा के खिलाफ खड़े होंगे तो वो मंडेला को मुक्त कर देंगे. जब मंडेला ने वो प्रस्ताव सुना तो उन्होंने अपना उत्तर लिखकर अपनी बेटी ज़िन्दज़ी को दे दिया. ज़िन्दज़ी ने उस सन्देश को सोवतो में के भीड़ भरी स्टेडियम को पढ़कर सुनाया.

सितंबर 1989 में, तैंतीस वर्षीय एफ. डब्लू. डी क्लार्क (F. W. de Klerk) दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति चुने गए. हालांकि वो "नेट्स" पार्टी के नेता थे, डी क्लार्क ने दक्षिण अफ्रीका की समस्याओं को हल करने के लिए ANC के साथ बातचीत करने का वादा किया था. डी क्लार्क ने सिसुलू और अन्य नेताओं को रोबेन द्वीप से मुक्त कराया. उन्होंने दिसंबर में मंडेला को एक मुलाक़ात के लिए बुलाया. दो महीने बाद डी क्लार्क ने घोषणा की,
कि ANC अब एक अवैध समूह नहीं था. फिर उन्होंने एक और भी बड़ी घोषणा की: नेल्सन मंडेला जेल से जल्द ही रिहा होंगे!

अध्याय 10

राष्ट्रपति मंडेला

11 फरवरी, 1990 को शाम 4:15 बजे नेल्सन मंडेला ने जेल से बाहर कदम रखा. वो इकहत्तर वर्ष के थे, और उन्होंने दस हजार दिन सलाखों के पीछे बिताए थे.

केप टाउन सिटी हॉल के बाहर पचास हजार लोग उनका भाषण सुनने के लिए एकत्रित हुए. लोग ज़ोर से चिल्लाए, "अमनदीन!" ("शक्ति!") जिसका अर्थ था "शक्ति हमारी है!"

वृद्ध लोगों ने मंडेला को इतने लंबे समय से नहीं देखा था, इसलिए वो क्या उम्मीद करें, उन्हें वो नहीं पता था. युवा दक्षिण अफ्रीकी लोगों ने मंडेला को कभी देखा ही नहीं था. उन्हें लगता था कि वो बूढ़ा आदमी अब राजनीति में शामिल होने के लिए बहुत थका हुआ होगा. लेकिन उनका सोच गलत था. स्वतंत्रता ने मंडेला को रिचार्ज कर दिया था. उन्होंने दुनिया भर की यात्रा की. वो जहाँ भी गए एक उत्साही भीड़ ने उनका स्वागत किया.

अपने ही देश में, उन्होंने कई काले दक्षिण अफ़्रीकी लोगों के साथ बहस की, जो अभी भी सफेद दक्षिण अफ़्रीकी लोगों के साथ काम नहीं करना चाहते थे या क्षमा-याचना के बारे में नहीं सोचना चाहते थे. क्योंकि इतने लंबे समय तक हिंसा उनके जीवन का हिस्सा रही थी, इसलिए उन्हें हिंसा ही, एकमात्र हल नजर आता था. नेल्सन अब भी मानते थे कि काले लोगों और गोरे लोगों को आपस में मिलकर काम करना चाहिए. उन्हें लगा कि अब वे अपनी पुरानी समस्याओं को पीछे छोड़ सकते थे.

दक्षिण अफ्रीकी के गोरे चाहते थे कि मंडेला, सरकार की प्रशंसा करें और जेल से बाहर आने के लिए सरकार का आभार व्यक्त करें. इसके बजाय, मंडेला ने विदेशी कंपनियों को, रंगभेद समाप्त होने तक दक्षिण अफ्रीका के साथ व्यापार करने से इनकार करने को कहा. उन्होंने एक व्यक्ति, एक वोट की भी मांग की. उन्होंने कहा, "जब मुझे सत्ताईस साल पहले जेल भेजा गया था, तब मेरे पास कोई वोट नहीं था...अब जब मैं बाहर आया हूँ, तब भी मेरे पास कोई वोट नहीं है. यह सब मेरी त्वचा के रंग के कारण है."

जब वास्तविक परिवर्तन की बात आई तो राष्ट्रपति डी क्लार्क ने अपना हाथ रोक लिया. वो शायद उम्मीद कर रहे थे कि समय के साथ मंडेला का प्रभाव कम हो जाएगा.

दक्षिण अफ्रीकी के काले लोग, बदलाव की कमी से बहुत निराश थे. अगस्त 1992 में ANC ने देशव्यापी आम हड़ताल का नेतृत्व किया, जो दक्षिण अफ्रीका के इतिहास में सबसे बड़ी हड़ताल थी. रंगभेद खत्म करने की अपनी मांग मनवाने के लिए पूरे देश में लोगों ने काम पर जाने से इनकार कर दिया. एक महीने बाद दक्षिण अफ्रीका के बिशो में, सैनिकों ने ANC की एक रैली पर गोलियां चलाईं, जिसमें अट्ठाईस लोग मारे गए और लगभग दो सौ अन्य घायल हुए. 26 सितंबर, 1992 को मंडेला और डी क्लार्क ने एक "रिकॉर्ड ऑफ़ अंडरस्टैंडिंग" यानि समझौते पर हस्ताक्षर किए. उसमें कहा गया कि वे मिलकर एक नई सरकार बनाने की कोशिश करेंगे. 1993 में मंडेला और डी क्लार्क को, संयुक्त रूप से नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

नोबेल शांति पुरस्कार

अल्फ्रेड नोबेल एक स्वीडिश वैज्ञानिक और डायनामाइट के आविष्कारक थे. वो हथियार निर्माता भी थे. लेकिन जैसे-जैसे वो बूढ़े हुए, उन्हें लगने लगा कि लोग उन्हें घातक विनाशकारी चीजों के लिए याद न रखें.

इसलिए, अपनी वसीयत में उन्होंने दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने वाले लोगों के लिए वार्षिक पुरस्कार देने के लिए पर्याप्त धन छोड़ा. यह पुरस्कार भौतिकी, रसायन विज्ञान, चिकित्सा और साहित्य में उपलब्धियों के लिए थे. पांचवां पुरस्कार किसी ऐसे व्यक्ति को दिया जाता था जिसने दुनिया में शांति लाने के लिए कड़ी मेहनत करी हो. दक्षिण अफ्रीका को एक साथ लाने के लिए, मंडेला और डी क्लार्क ने नोबेल शांति पुरस्कार जीता.

अगले वर्ष अप्रैल में, दक्षिण अफ्रीका में सही मायने में पहला लोकतांत्रिक चुनाव हुआ. देश में सीनेट और नेशनल असेंबली में प्रतिनिधियों के साथ-साथ प्रांतों में स्थानीय सरकारों के लिए मतदान हुए. दक्षिण अफ्रीका के चार करोड़ से अधिक नागरिकों में से कोई भी व्यक्ति, जो वयस्क था, मतदान कर सकता था, जिसमें काले लोग भी शामिल थे. यानी अब लाखों नए मतदाता थे.

नेल्सन मंडेला ने राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव लड़ा. इस बात की कल्पना करना कठिन था कि अश्वेत दक्षिण अफ़्रीकी लोगों के लिए वो कितना रोमांचक क्षण था. जब मंडेला का काफिला, कस्बों में घुसा तो लोग तालियां बजाते हुए अपने घरों से बाहर निकले. उन्होंने उनके नाम का जाप किया, सड़कों पर नृत्य किया. लोग अपने हीरो की एक झलक पाने के लिए वे बिजली के खम्भों पर चढ़ गए.

बेशक, नेल्सन के मित्र वाल्टर सिसुलू ने राष्ट्रपति के लिए उनके अभियान में मदद की. पर दुःख की बात थी कि नेल्सन के दूसरे करीबी दोस्त ओलिवर टैम्बो दक्षिण अफ्रीका का पहला लोकतांत्रिक चुनाव देखने के लिए जीवित नहीं रहे. 24 अप्रैल, 1993 को एक स्ट्रोक के कारण उनकी मृत्यु हो गई. ओलिवर टैम्बो के संघर्ष के बिना, नेल्सन शायद कभी भी जेल से रिहा नहीं होते.

राष्ट्रपति पद के लिए नेल्सन मंडेला, डी क्लार्क के खिलाफ लड़े. चुनाव में चार दिनों के दौरान लोग वोट देने के लिए घंटों लाइनों में खड़े रहे. जब सभी परिणामों की गिनती हुई, तो ANC ने नेशनल असेंबली की 400 में से 252 सीटों पर जीत हासिल की. इसका मतलब राष्ट्रीय सरकार में 252 अश्वेत प्रतिनिधि थे. उन्होंने सीनेट में भी नब्बे में से साठ सीटें जीतीं थीं. डी क्लार्क राष्ट्रपति पद हार गए थे. उपविजेता के रूप में अब वो उप-राष्ट्रपति के रूप में काम करने वाले थे.

डी क्लार्क, एक काले दक्षिण अफ्रीकी के अधीन सेवा करने वाले पहले गोरे उप-राष्ट्रपति थे.

10 मई 1994 को, नेल्सन मंडेला दक्षिण अफ्रीका के पहले अश्वेत राष्ट्रपति बने.

मंडेला ने पांच साल तक देश की सेवा की. रॉबेन द्वीप में उनके वर्षों के सम्मान के कारण लोग अक्सर उन्हें "टाटा" कहते थे, जिसका अर्थ था "पिता," या "कैदी 46664". मंडेला के पास सरकार चलाने का बहुत अधिक अनुभव नहीं था, और दक्षिण अफ्रीका में काम, अन्य देशों से कहीं अधिक कठिन था. यहां तक कि गोरे नागरिकों और काले नागरिकों के कंप्यूटर रिकॉर्ड को दो अलग-अलग कंप्यूटर सिस्टम पर, दो पूरी तरह से अलग डेटाबेसों में रखा गया था.

अब पहली बार नेल्सन और वाल्टर सिसुलू साथ काम नहीं कर रहे थे. अपने दोस्त ने चुनाव के बाद वाल्टर सिसुलू ने राजनीति से सन्यास ले लिया. 2003 में उनकी मृत्यु हो गई.

दक्षिण अफ्रीका के नए संविधान ने सभी प्रकार के भेदभावों को गैरकानूनी घोषित किया. लेकिन कई काले दक्षिण अफ्रीकी अभी भी गरीबी में रह रहे थे, और नेल्सन उनकी मदद करना चाहते थे. उन्होंने राष्ट्रपति के रूप में अपना अधिकांश वेतन गरीब बच्चों के लिए एक कोष में दान कर दिया. नेल्सन अभी भी अपने निजी जीवन में लगातार परिवर्तन कर रहे थे. अपने अस्सीवें जन्मदिन पर, उन्होंने बच्चों की अधिकार कार्यकर्ता ग्राका मचेल से दोबारा शादी की, जिनसे वे पहली बार मोज़ाम्बिक की यात्रा पर मिले थे.

1999 में मंडेला ने राष्ट्रपति पद से इस्तीफा दे दिया. नेल्सन की जगह थाबो म्बेकी ने ली, उसके बाद कगलेमा मोटलांथे और जैकब जुमा आए. सभी काले दक्षिण अफ्रीकी थे जो ANC के सदस्य थे.

लेकिन मंडेला के पेड़ हिलाने के दिन अभी खत्म नहीं हुए थे. उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के लोगों को एड्स के बारे में शिक्षित करने के लिए खुद को समर्पित कर दिया. यह उनके लिए एक बेहद निजी कारण था. उनके अपने बेटे मैकगाथो की 2005 में, उसी बीमारी से मृत्यु हुई थी.

नेल्सन मंडेला ने दक्षिण अफ्रीकी लोगों के लिए लड़ना कभी बंद नहीं किया. लेकिन आखिर में वे अपने परिवार के साथ समय बिता सके. 2010 में वो विश्व कप फ़ुटबॉल टूर्नामेंट में दिखाई दिए, जिसकी मेजबानी उस वर्ष दक्षिण अफ्रीका ने की थी. यह आखिरी बार था जब वो सार्वजनिक रूप से दिखाई दिए. फिर वो अपने बचपन के गाँव में वापस चले गए जहाँ उनके दोस्त अक्सर उनसे मिलने आते थे. अपने तीन शेष बच्चों, सत्रह पोते-पोतियों की बढ़ती संख्या से घिरे, अपनी पत्नी के साथ, नेल्सन मंडेला ने एक नए दक्षिण अफ्रीका को देखा. एक ऐसे दक्षिण अफ्रीका को, जिसे बनाने में उन्होंने काफी मदद की थी.

नेल्सन मंडेला का 5 दिसंबर, 2013 को ह्यूटन, जोहान्सबर्ग में उनके घर में सांस संबंधित जटिलताओं के कारण निधन हो गया, जिससे वे अपने जीवन के अंतिम वर्षों में पीड़ित थे. दुनिया भर के लोगों ने मंडेला के निधन पर शोक व्यक्त किया और उनकी शांति और स्वतंत्रता की विरासत का जश्न मनाया.
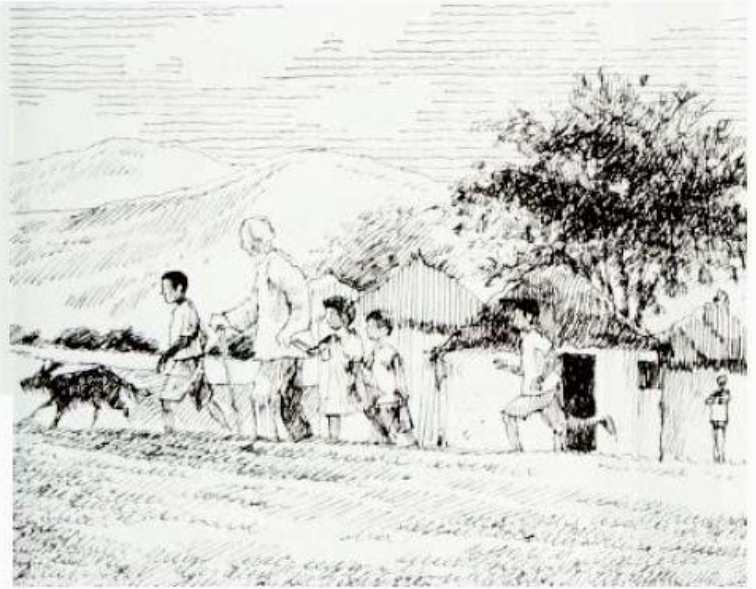
नेल्सन मंडेला के जीवन की समयरेखा

1918 नेल्सन मंडेला का जन्म हुआ

1927 मंडेला के पिता की मृत्यु हो गई और मंडेला जोंगिंताबा के साथ रहने चले गए

1940 मंडेला को फोर्ट हेयर से निष्कासित कर दिया गया और फिर वो जोहान्सबर्ग भाग गए

1944 मंडेला ANC में शामिल हुए और उन्होंने एवलिन नतोको मासे (Ntoko Mase) से शादी की

1946 रंगभेद की शुरुआत

1952 ANC ने अवज्ञा अभियान का नेतृत्व किया. मंडेला और ओलिवर टैम्बो ने देश में पहली अश्वेत लॉ पार्टनरशिप फर्म खोली

1956 देशद्रोह ट्रायल की शुरुआत

1958 मंडेला और एवलिन का तलाक

मंडेला ने नोमज़ामो विनिफ्रेड मदिकिज़ेला (विनी) से शादी की

1960 शार्पविले नरसंहार

1961 "द स्पीयर ऑफ द नेशन" की स्थापना

1964 मंडेला रॉबेन द्वीप की जेल में गए

1976 सोवेटो में दंगे हुए

1977 स्टीव बीको की हत्या कर दी गई

1982 मंडेला को पोल्समूर जेल में स्थानांतरित किया गया

1990 मंडेला जेल से रिहा हुए

1993 मंडेला और डी क्लार्क को नोबेल शांति पुरस्कार मिला

1994 मंडेला दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति चुने गए

1996 मंडेला और विनी का तलाक

1998 मंडेला ने ग्राका मचेल से शादी की

2005 मंडेला ने एड्स से अपने बेटे की मौत की घोषणा की

2013 मंडेला का निधन 5 दिसंबर को हुआ

दुनिया की समयरेखा

1488 पहला यूरोपीय पोत, एक पुर्तगाली व्यापारिक जहाज,
केप ऑफ गुड होप, दक्षिण अफ्रीका के आसपास आया

1902 अंग्रेजों और डचों के बीच बोअर युद्ध समाप्त हुआ

1913 घरेलू उपयोग के लिए इलेक्ट्रिक रेफ्रिजरेटर का आविष्कार

1914 प्रथम विश्व युद्ध की शुरुआत

1920 अमेरिका में महिलाओं को वोट का अधिकार मिला

1933 अमेरिका में निषेधाज्ञा को निरस्त किया गया

1953 जोसेफ स्टालिन का निधन

1961 बर्लिन की दीवार का निर्माण हुआ

1963 स्माइली फेस का आविष्कार हुआ
शेक्सपियर के नाटक *जूलियस सीज़र* का स्वाहिली में अनुवाद हुआ

1969 मनुष्य चंद्रमा पर उतरा

1974 लीमा, पेरू में भूकंप आया

1981 वेल्स के राजकुमार चार्ल्स ने, लेडी डायना स्पेंसर से शादी की

1985 नए कोक का आविष्कार हुआ, जो जल्दी से गायब हो गया

1986 अमेरिका ने रंगभेद विरोधी आर्थिक प्रतिबंध विधेयक पारित किया

1998 पोप जॉन पॉल द्वितीय ने, क्यूबा का दौरा किया

2012 बराक ओबामा अमेरिका के दोबारा राष्ट्रपति चुने गए